चन्दामामा
सितम्बर १९९२
4
RS.

गति सीमा
गति बढ़ाओ, २ लैक्टो किंग प्रति मिनट खाओ.
एक दिशा मार्ग
एक ही दिशा स्वाद भरी, दिशा लैक्टो किंग की।
हरी बत्ती
साफ रास्ता, चलते जाओ, लैक्टो किंग खाते जाओ।
आगे मिठाई की दुकान
लैक्टो किंग से जेब भरना ना भूलना.
बम्प से टकराओ
उछलो और १ लैक्टो किंग मुंह मे टपकाओ!
कोई शोर नहीं
न चबाओ, सिर्फ चूसो मौज उड़ाओ.
चले चलो पैरीज़ लैक्टो किंग की डगर पर
इतना स्वाद कि एक से मन ना भरे
Lacto King

# Raja says "Spot The Mistakes"

CREATED BY NAC ADVERTISING

**ANSWERS: LOWER SECTION** L TO R : 1. OPEN DRAIN 2. MAN CROSSING WITHOUT LOOKING SIDEWAYS. **MIDDLE SECTION** L TO R : 1. PIPES STICKING OUT FROM TRUCK 2. MOTOR-CYCLIST CARRYING LADDER 3. MAN CROSSING ROAD IN-BETWEEN TRAFFIC 4. MAN REMOVING GOODS FROM VAN ON ROAD. **UPPER SECTION** EXTREME LEFT : GIRL CROSSING ROAD BEFORE ZEBRA CROSSING.

**Safety for your care**
**says Goody,**

**The Nerolac Tiger**

GOODLASS **NEROLAC** PAINTS LTD.
G.K. Marg, Lower Parel, Bombay 400 013.

## ROTARY CLUB OF BOMBAY

DO YOU ALSO WANT TO SERVE YOUR COMMUNITY, LIKE RAJA? YOU CAN START AN INTERACT CLUB IN YOUR SCHOOL TODAY. CONTACT YOUR LOCAL ROTARY CLUB FOR DETAILS OR WRITE TO US AT :

Red Cross Bldg., 2nd Floor, 141, Shaheed Bhagat Singh Road, Bombay 400 023.

# चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

## एकता के प्रतीक हमारे त्योहार

हमारे देश में वर्ष के पहले भाग की अपेक्षा दूसरे भाग में त्योहारों की भरमार रहती है । इनमें से कुछ का हालांकि एक-न-एक धर्म से ताल्लुक रहता है, लेकिन वास्तविक उत्सव धर्म की सभी सीमाएं लांघ जाते हैं, जिसके परिणाम स्वरूप लोग मैत्री और एकता की भावना से एक दूसरे से मिलते हैं ।

दरअसल, त्योहारों में एक ऐसा आकर्षण रहता है जो हर धर्म के व्यक्ति को अपनी ओर खींचता है । इसका आधार यह समझें कि जब हमारा एक पड़ोसी किसी कारण खुश होता है तो वह अपनी खुशी हमारे साथ बांटना चाहता है ।

त्योहारों के दौरान अपने पड़ोसी के निकटतम होने की भावना और स्पष्ट हो जाती है । इस मौके पर लोगों के बीच एक दूसरे के प्रति सद्भावना बढ़ती है । ईद के मौके पर यह ज़रूरी नहीं कि कोई ग़ैर-मुस्लिम मस्जिद में जाकर इबादत अदा करे, लेकिन वह अपने मुस्लिम भाइयों के गले लगकर उनका अभिवादन ज़रूर करता है । इसी प्रकार एक ग़ैर-क्रिस्तान के लिए यह ज़रूरी नहीं कि वह क्रिस्मस वाले दिन किसी गिरजाघर में आधी रात के समय वहां प्रार्थना में शरीक हो, लेकिन वह अपने क्रिस्तान भाई की खुशी में शरीक होना नहीं भूलता । इसी प्रकार एक गैर-हिंदू भी किसी हिंदू के यहां होने वाले उत्सव में बराबर का हिस्सेदार रहता है ।

कहना न होगा कि इस तरह ये त्योहार धीरे-धीरे लोगों के मन पर छाते जा रहे हैं । दीवाली, क्रिस्मस, पोंगल, होली, बकर ईद, विशु, बैसाखी, ओणम-ये सभी अब सार्वभौमिकता के स्तर पर आ गये हैं और राष्ट्रीय एकता को प्रगाढ़ करने की दिशा में ठोस भूमिका निभा रहे हैं । अगस्त का महीना तो और भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि इस महीने में त्योहारों की कतार लग जाती है ।

आओ, हम अपने सब भेदभाव भूल जायें और अपनी खुशी के इन क्षणों को आपस में मिलकर और सार्थक बनायें ।

वर्ष : ४५ सितम्बर १९९२ अंक : १

एक प्रति : रु. ४/- वार्षिक चन्दा : रु. ४८/-

भारत के सबसे बड़े, सबसे आधुनिक प्लांट में निर्मित.
कैम्पको लिमिटेड, मैंगलोर
Campco
Creamy Milk Chocolate
R K SWAMY/BBDO CL 10117 HIN
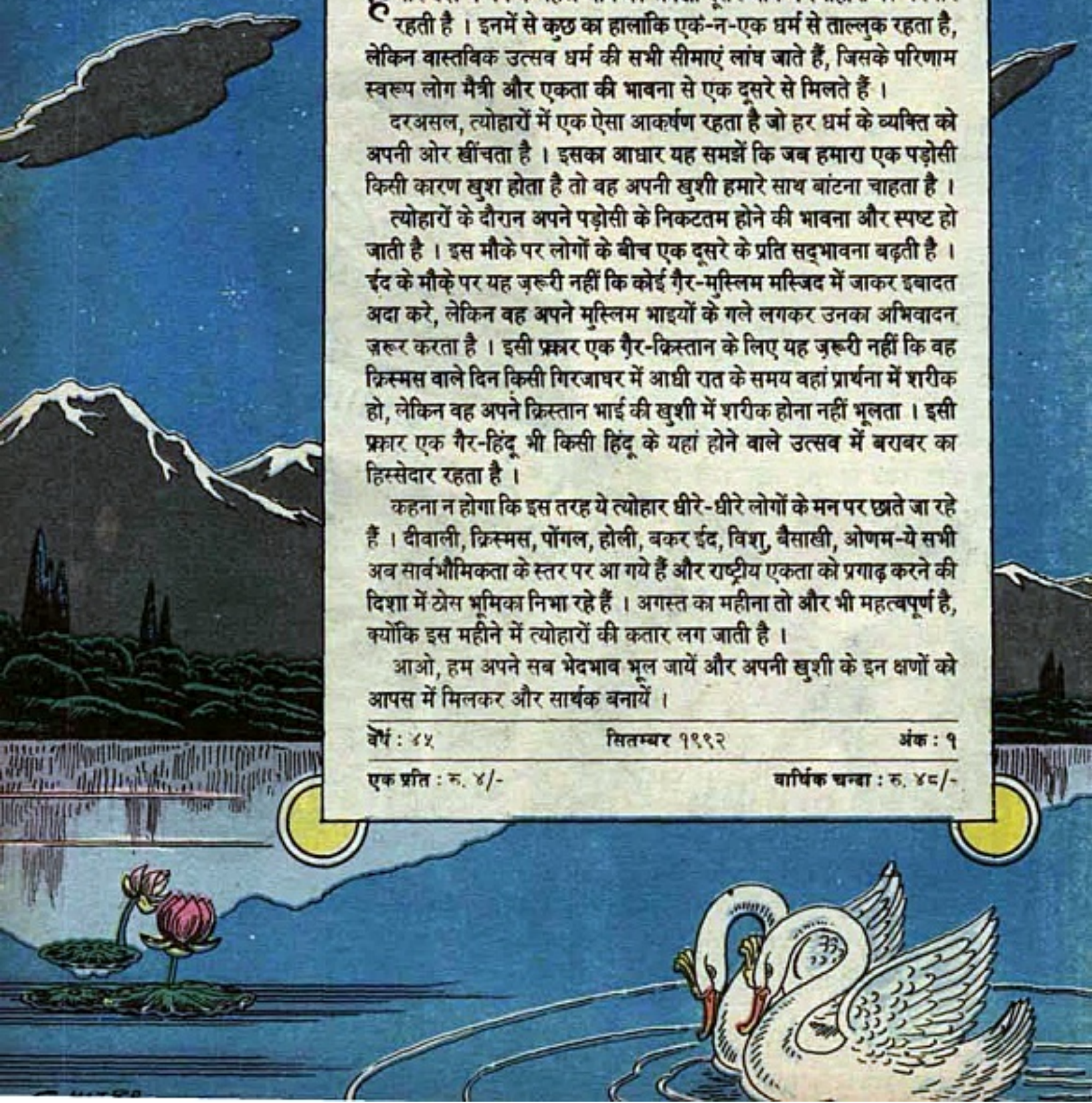
खबरें संसार की

# बेहतर दुनिया की ओर

इसे पृथ्वी शिखर सम्मेलन कहना उचित ही था। संयुक्त राष्ट्र का पर्यावरण और विकास संबंधी सम्मेलन, जो ब्राज़ील के शहर रियो डी जेनेरो में हुआ, अपने को इसी मुद्दे से जोड़े रहा कि पृथ्वी नाम के इस ग्रह की किस तरह पर्यावरण के प्रदूषण से रक्षा की जाये और कैसे इसे टुकड़े-टुकड़े होने से बचाया जाये। इस सम्मेलन में विभिन्न देशों के ११५ प्रमुख उपस्थित थे।

ये नेता पृथ्वी की जैव-विविधता (बायो-डाइवर्सिटी) और इसके तापक्रम के बढ़ने पर ही बोलते रहे, और इनके भाषण बड़े चाव से सुने गये।

यह सम्मेलन ऐसे ही चलता रहता, लेकिन चार बच्चों ने, जिनमें से दो कैनेडा से थे और एक-एक चिली और जर्मनी से, इसमें नये प्राण फूंक दिये। सम्मेलन को संबोधित करने का उन्हें जब विशेषाधिकार मिला तो उन्होंने नेताओं को याद दिलाया कि अब वह समय आ गया है जब इस ग्रह को अपने हाल पर छोड़ दिया जाये और पुराने तरीकों में सुधार किया जाये। कैनेडा के बारह-वर्षीय एक बालक ने अपने इन ज़ोरदार शब्दों में शिखर सम्मेलन को संबोधित किया:

"मैं भविष्य के लिए लड़ रहा हूं। मैं विश्व के उन तमाम बच्चों की तरफ से यहां कुछ कहना चाहता हूं जिन्हें भरपेट खाने को नहीं मिलता। मैं उन तमाम पशुओं और पक्षियों की ओर से भी कुछ कहना चाह रहा हूं जो इस ग्रह पर मर रहे हैं। मुझे धूप में जाते हुए डर लगता है, क्योंकि हमारे ओज़ोन की सतह में सुराख हो गया है। मुझे हवा में सांस लेते हुए डर लगता है, क्योंकि मैं नहीं जानता उसमें क्या-क्या रसायन मिल गये हैं। अगर आप इस पर्यावरण को सुरक्षित नहीं रख सकते तो कम-से-कम इसे बरबाद भी मत कीजिए। हमने किसी-न-किसी तरह अपने लिए पैसा जुटाया और यहां तक आये ताकि आप बड़ों से कह सकें कि आप अपने तौर-तरीके बदलें।"

नन्ही सैवर्न सुजुकी ने जब अपना भाषण खत्म किया तो सभी श्रोताओं ने खूब जमकर उसे दाद दी। कुछ प्रतिनिधि तो रो पड़े। जिस समय वे अपने आंसू पोंछ रहे थे, उस समय टेलीविज़न के कैमरे अपना काम कर रहे थे। उन लोगों के दिल इस तरह पसीज क्यों गये थे?

इसका सुराग हमें इस शिखर सम्मेलन के अंत में अपनाये गये एजेंडा-२१ नाम के प्रस्ताव से मिलता है । कुछ देश जो अपने आपको विकसित कहते हैं, पिछली एक या दो शताब्दियों से उद्योगों को बढ़ावा देकर पृथ्वी के सीमित साधनों को बेरोकटोक नष्ट कर रहे हैं । साथ ही वे इस ग्रह के पर्यावरण को भी काफी नुक्सान पहुंचा रहे हैं । पृथ्वी शिखर सम्मेलन ने उन्हें स्पष्ट शब्दों में बता दिया है कि अब उन्हें, जो कुछ उन्होंने अब तक नुक्सान किया है, पूरा करना होगा— उस पर चाहे कितनी भी लागत क्यों न आये ।

इसमें कोई शक नहीं कि मानव जाति की उन्नति के लिए पृथ्वी के संसाधनों को विकास के काम में लाने पर किसी को कोई आपत्ति नहीं हो सकती । लेकिन प्रकृति से हमें उतना ही लेना होगा जितना कि हमारे अस्तित्व के लिए ज़रूरी है । बाकी हमें वैसे ही छोड़ देना होगा ताकि प्रकृति भविष्य के लिए अपने को कायम रख सके । इसे हम "सुनहरी मध्य मार्ग" (गोल्डन मीन) कह सकते हैं । भारत के प्रधान मंत्री ने

अपने भाषण में इसी की ओर संकेत किया था जब उन्होंने अपनी बात पर बल देने के लिए पृथ्वी की स्तुति में लिखी गयी पुरातन काल की एक भारतीय कविता को उद्धृत किया, "सागर तुम्हारी मेखला है, पर्वत तुम्हारा वक्ष है, ओ धरती मां । मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं । मैं तुम्हें अपने पांव से छूने का साहस कर रहा हूं । इसके लिए तुम मुझे क्षमा करना ।"

शिखर सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए ब्राजील के राष्ट्रपति ने विश्व के नेताओं से अनुरोध किया कि वे एकजुट होकर पर्यावरण को सुधारने में लग जायें । उन्होंने यह भी कहा कि "नये विश्व को निर्मित करने का यह एक अद्वितीय, और संभवतया अंतिम, अवसर है ।"

अब जो प्रश्न उठता है, वह यह है कि हम इस काम को सरंजाम कैसे दें? संकेत हमें फिर बच्चों से ही मिला है । इंग्लैंड के एक बालक ने रियो पार्क में, धातु और काष्ठ की एक कलाकृति को, जिसे "जीवन वृक्ष" कहा गया है- अपने संदेश में कहा, "ऊर्जा बचाने के लिए मैं तमाम बत्तियां बंद कर दूंगा, जब हमें उनकी ज़रूरत नहीं होगी ।" न्यू मैक्सिको के एक अन्य बालक ने कहा, "मैं वचन देता हूं कि मेरे चारों ओर जितना कूड़ा पड़ा है, उसे मैं समेटूंगा ताकि यह दुनिया अधिक सुंदर दिखे ।"

एक और बालक ने लिखा, "मैं गंदगी बिखेरना बंद कर रहा हूं । मैं अब से इसे अपनी जेब में रखा करूंगा ।"

विश्व के नेता अपने ध्येय में चाहे सफल न भी हों, आने वाली पीढ़ी असफल नहीं होगी । २१ वीं शताब्दी अपने हाथ फैलाकर उसका इंतज़ार कर रही है ।

# प्रेतों की नेकी

रमेश एक गरीब व्यक्ति था। उसके एक बेटी थी जिसका नाम विमला था। विमला सयानी हो चुकी थी। उसके लिए तीन-चार रिश्ते आये और उसे पसंद भी कर लिया गया, पर दहेज़ काफी न होने के कारण बात्त बीच में ही रह गयी।

एक दिन रमेश के बचपन का एक दोस्त विमला के लिए एक रिश्ता लेकर आया। इस दोस्त का नाम मुकेश था। वह शहर में एक नामी व्यापारी था। वह रमेश की हर तरह से भलाई चाहता था। जिस लड़के का वह रिश्ता लेकर आया था, उसका नाम शंकर था। शहर में शंकर की अच्छी-खासी नौकरी थी। मां-बाप उसके गांव में रहते थे। ज़मीन-जायदाद भी काफी थी। खाता-पिता परिवार था। विमला को उन्होंने पसंद कर लिया। दहेज़ में उन्होंने केवल दस हज़ार रुपये मांगे।

लड़के वालों की मांग से रमेश को थोड़ी परेशानी हुई। मुकेश को एक तरफ ले जाकर उसने पूछा, "तुम मेरे सामर्थ्य से बाहर का रिश्ता लेकर क्यों आये हो? इस सब से मैं कैसे निपट पाऊंगा?"

दोस्त की बात पर मुकेश हंस पड़ा। बोला, "शादी का खर्चा तुम उठाओ, दहेज़ की व्यवस्था मैं किये देता हूं। तुम यह रकम थोड़ी-थोड़ी करके पांच वर्षों में चुका देना। लड़का बढ़िया है। मैं चाहता हूं कि बेटी के दिन सुख-चैन से कटें।"

विवाह तय हो गया और मुहूर्त सात दिन बाद का निकला। रमेश अब विवाह की तैयारी में लग गया, लेकिन मुकेश के यहां से दहेज़ की रकम नहीं पहुंची।

रमेश ने दो-एक दिन इंतज़ार किया, और फिर मजबूर होकर उसे मुकेश के यहां जाना पड़ा। लेकिन जब तक वह उसके यहां

कमला चौधरी

पहुंचा, शाम हो चुकी थी ।

मुकेश उस समय अपने काम में व्यस्त था । फिर भी रमेश को देखते ही वह उठ खड़ा हुआ और क्षमा मांगते हुए बोला, "हाथ में पैसा आज ही आया है । देरी के लिए क्षमा चाहता हूं । कल मेरी मां की बरसी है । मैंने सोचा जैसे ही यह काम खत्म होगा, मैं स्वयं ही तुम्हें पैसे पहुंचा आऊंगा ।"

मुकेश के हाथों से पैसा लेकर रमेश ने उसे ठीक से संभाल लिया और बोला, "अब मैं चलता हूं । वहां भी अभी ढेर सारे काम करने बाकी हैं ।"

रात हो चुकी थी । रमेश अपने गांव को लौट रहा था । उसे कोई गाड़ी नहीं मिली थी । इसलिए उसे पैदल ही रवाना होना पड़ा । रास्ते में एक छोटा-सा जंगल भी पड़ता था ।

रमेश अंधेरे को चीरता हुआ आगे बढ़े जा रहा था । मन में उसके भय भी था । इतने में एक साल वृक्ष के पीछे से बिजली की तेज़ी से कोई व्यक्ति उसकी ओर लपका । वह बुर्के में था । उसके हाथ में एक छुरा था । रमेश को वह छुरा दिखाते हुए वह व्यक्ति बड़ी रौबीली आवाज़ में बोला, "जो कुछ तुम्हारे पास है, वह मेरे हवाले कर दो, वरना ऐसे ही अपनी जान गंवा बैठोगे ।"

अब तो रमेश मारे भय के बेहाल हो गया । उसके मुंह से कोई शब्द निकल नहीं पा रहा था । उस व्यक्ति ने उसे टटोलना शुरू किया और जैसे ही उसके हाथ वे पैसे लगे, वह उन्हें लेकर वहां से फौरन ग़ायब हो गया । रमेश का मन दुःख से भर गया । उसे लगा वह अब अपनी बेटी का विवाह कभी नहीं कर पायेगा । पर उसके पास अब चारा भी क्या था । वह मन मसोस कर रह गया और अपने गांव की ओर बढ़ा ।

रास्ते में एक झोंपड़ी पड़ी । वहां पर दो व्यक्ति सरदी से बचने के लिए लकड़ी जलाकर आग तप रहे थे । बीच-बीच में वे बतिया भी लेते थे । उनकी बातों में विमला का ज़िक्र भी आया । विमला का नाम सुनकर रमेश चौंका । वह एक पेड़ के पीछे छिपकर उनकी बातें सुनने लगा ।

"जो भी हो, विमला की शादी तो अब

हो ही जायेगी ।" उनमें से एक व्यक्ति बोला और इसके साथ ही वह हंसने लगा ।

"अरे, दहेज की रकम तो लुट चुकी है । यह शादी अब हो कैसे सकती है?" दूसरा व्यक्ति व्यंग्य करते हुए बोला ।

"लगता है तुम्हें अब कम नज़र आने लगा है । जानते नहीं उसे लूटने वाले व्यक्ति को सांप ने डस लिया है और वह वहीं साल के वृक्ष के पास मरा पड़ा है । अब तुम कैसे कह सकते हो कि दहेज़ की रकम लुट चुकी है?" पहला व्यक्ति बोला । प्रेत-से दिखने वाले उन दोनों व्यक्तियों की बात सुनकर रमेश की जान में जान आयी । वह तुरंत पीछे की ओर मुड़ा और साल वृक्ष के पास पहुंचा ।

वाकई, उसे लूटने वाला व्यक्ति वहां मरा पड़ा था । रमेश को अपने पैसे तो मिले ही मिले, वहां उसे गहनों की एक पोटली भी मिली । उसने सोचा जैसे ही वह शादी से फ़ारिग होगा, गहनों की वह पोटली शहर की कोतवाली में जमा करवा आयेगा । खैर, वह ख़ुशी-ख़ुशी घर लौट आया ।

घर पहुंच कर उसने सारा किस्सा अपनी पत्नी को सुनाया । पति की बात सुनकर पत्नी बोली, "तुम कुछ भी कहो, भाग्य ने हमारा साथ दिया है । हमें हमारी खोयी हुई रकम तक मिल गयी ।"

तीसरे दिन शादी थी । बारात की काफी गरमा-गरमी थी । रमेश की दूसरी बेटी भी अपने परिवार वालों के साथ दुलहे का स्वागत करने आगे बढ़ी । इतने में दुलहे की बड़ी बहन अपनी मां से एकाएक बोली, "देखो, देखो, मां, बुर्के वाला लुटेरा जो मेरे गहने लेकर भागा था, वे गहने यह लड़की पहने हुए है ।" और यह कहते ही उसने उस लड़की का हाथ कसकर थाम लिया ।

रमेश को यह खबर नहीं थी कि जो गहने वह जंगल से लाया था और जिन्हें वह लौटाने की सोच रहा था, वे उसकी छोटी बेटी ने उसे बिना बताये पहन लिये हैं ।

"ये गहने तुम्हारे यहां आये कैसे? लगता है उस बुर्के वाले लुटेरे से तुम लोगों का कोई संबंध है ।" दुलहे की मां ने बड़े कड़े स्वर में कहा और इसके साथ ही उसने विमला की बहन के गले से कुछ गहने खींच लिये ।

अब वहां काफी बड़ा हंगामा खड़ा हो गया था । सब लोगों की ज़बान पर एक ही बात थी-ये गहने इनके पास आये कैसे ।

"मुझे ये गहने एक बुर्के वाले लुटेरे के शव के पास से मिले हैं ।" रमेश ने अपनी सफाई देते हुए कहा ।

"झूठ । हमने क्योंकि अभी कहा कि हमारे ये गहने एक बुर्के वाले लुटेरे ने लूटे थे, इसलिए तुमने कह दिया कि तुम्हें ये गहने उसके मृत शरीर के पास मिले । साफ ही है कि वह लुटेरा तुम ही हो । हमें लुटेरों का यह रिश्ता मंजूर नहीं ।" और इन शब्दों के साथ ही दुलहा और उसके साथ आये सभी लोग वापस चले गये ।

उस रात रमेश के घर में किसी को नींद नहीं आयी । हर कोई अपनी-अपनी तरह से चिंता में डूबा हुआ था ।

पर अभी सुबह भी नहीं हुई थी कि किसी ने रमेश के घर का दरवाज़ा खटखटाया । दरवाज़ा विमला ने ही खोला । बाहर दूलहा शंकर खड़ा था ।

अब तक वहां रमेश और उसकी पत्नी भी आ गये थे । शंकर ने उनका अभिवादन किया और बोला," यदि आपको आपत्ति न हो तो मैं आपकी बेटी से शादी करने को तैयार हूं । आप फिर से मुहूर्त्त निकलवा लें । दहेज़ इत्यादि का भी कोई सवाल नहीं ।"

खैर, विमला का विवाह शंकर से हो गया और किसी तरह की कोई बाधा भी नहीं आयी, पर विमला थी बड़ी हैरानी में । वह शंकर से पूछे बिना रह न सकी, "उस दिन

तो तुम सब को लेकर वापस चले गये थे, और अब अकेले ही मुझसे शादी करने अब चले आये। क्या मैं इसका कारण जान सकती हूं?"

विमला की बात सुनकर शंकर धीमे से हंस दिया और फिर उसने उसकी शंका का समाधान करते हुए कहा, "यहां जब शादी की बात खत्म हो गयी तो मेरा नौकरी पर लौटना ज़रूरी हो गया। मैंने अपनी छुट्टी रद्द कर दी और शहर के लिए चल पड़ा। रात हो चुकी थी। रास्ते में जंगल पड़ा। आगे बढ़ा तो एक झोंपड़ी के पास दो व्यक्ति आग तापते दिखाई दिये। वे आपस में बड़ी गंभीरता से बातें कर रहे थे। मैं एक पेड़ के पीछे छिपकर उनकी बातें सुनने लगा। पर वे साधारण व्यक्ति नहीं दिखते हैं। मुझे शक हुआ—हो न हो ये प्रेत हैं। खैर, मेरे कान अब उनकी बातों पर गड़े हुए थे। फिर मैंने उनकी ज़बान से अपना नाम सुना। एक बोला-इस शंकर के बारे में तुम्हारा क्या खयाल है। अच्छा-भला वह विमला से शादी कर रहा था और फिर बात धरी की धरी रह गयी।

"मैं तुम्हें असली बात बताता हूं। प्रेत दिखने वाले दूसरे व्यक्ति ने कहा, पहले तुम यह बताओ कि तुम्हें यह प्रेत योनि कैसे मिली?

"बताता हूं। मैं कभी छोटी-मोटी चोरी किया करता था। मेरी इसी आदत के कारण दो परिवार बरबाद हो गये। मैं उसी पाप को भुगत रहा हूं। उसी के कारण मैं इस योनि में भटक रहा हूं। अच्छा, अब तुम

अपनी बात बताओ—पहले प्रेत ने कहा ।

"दूसरे प्रेत ने अपनी कहानी इन शब्दों में बतायी—अपने दोनों बेटों की शादी में मैंने बहुओं के मां-बाप से तगड़ा दहेज़ ऐंठा । दूसरी-तीसरी तरह से भी काफी रकम ऐंठी । एक बहू का बाप तो इस सबसे इतना दःखी हुआ कि वह विक्षिप्त-सा हो गया । मुझ से यह बहुत बड़ा पाप हुआ, जिसकी मैं अब भुगत रहा हूं ।

"तुम ठीक ही कहते हो-पहले प्रेत ने कहा । हम दोनों को अपनी-अपनी करनी का फल मिल गया है । इसीलिए तो कहते हैं-जैसी करनी, वैसी भरनी ।

"कुछ देर तक दोनों प्रेत चुप रहे । आखिर पहला प्रेत ही बोला-तुम शंकर के बारे में पूछ रहे थे न । बेटी वालों से इन लोगों ने काफी कुछ ऐंठने की कोशिश की । यह तो पाप था ही । इस पर उन्होंने उन पर चोरी का इल्ज़ाम भी लगा दिया । शंकर के होने वाले ससुर ने लाख सफाई देनी चाही, पर शंकर के निकट संबंधियों ने उसकी हर बात को ठुकरा दिया । इस तरह यह शादी बीच में ही रह गयी । अब उस लड़की का क्या हश्र होगा, वह तो भगवान ही जाने, पर शंकर को इस पाप की सजा जरूर मिलेगी ।

"मैं तुमसे पूरी तरह सहमत हूं । हम स्वयं भी तो इसी तरह के पाप की सज़ा भुगत रहे हैं । चलो, ठीक है, प्रेत योनि की संख्या ऐसे ही बढ़ती रहेगी । और यह कहकर दूसरा प्रेत ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगा ।"

शंकर विमला को सारी बात बता चुका था । फिर कहने लगा, "विमला, मैं उस समय बहुत डर गया था । इस रूप में प्रेत मैंने पहली बार देखे थे । लेकिन वे भले प्रेत हैं । उनकी बातों से बिलकुल साफ हो गया कि तुम्हारे पिताजी एकदम निर्दोष हैं । इससे मेरी आखें खुल गयीं । मैं तुरंत वहां से लौट पड़ा और अब मैं तुम्हारे सामने हूं ।"

विमला ने मन ही मन उन अज्ञात प्रेतों के प्रति अपनी कृतज्ञता जतायी। अखिर उन्हीं के कारण तो उसकी लुटी खुशी अब लौट आयी थी ।

# जादुई महल

## ५

*[राजकुमारी विद्यावती सारस सरोवर वाले विश्राम महल से गायब है। सेनापति उग्रसेन ने उसकी खोज में चारों ओर अपने सैनिक भेजे हैं। वह राजा वीरसेन से एक युवक का परिचय करवाता है। युवक महेंद्रनाथ की प्रार्थना बड़ी विचित्र है। वह कहता है कि वह खोज तभी शुरू करेगा जब उसकी अनुपस्थिति में उसकी मां की ठीक से देखभाल की जायेगी। —उसके बाद]*

युवक महेंद्रनाथ राजा के सामने खड़ा था। राजा उसे ग़ौर से देख रहा था। उसे लगा कि उसके सेनापति का अनुमान ग़लत नहीं है। युवक किसी ऊँचे परिवार से दिखता था। वह चाहे राजसी परिवार से न भी हो, दिखता वह लगभग वैसा ही था।

"तुम कौन हो? तुम्हारा नाम क्या है?" राजा ने युवक से ढेर सारे प्रश्न पूछ डाले। "तुम कहां के रहने वाले हो? हमारे सैनिक हर दिशा में फैले हुए हैं और कुछ सैनिक पड़ोस के देशों में भी गये हुए हैं। तुम्हारा कहना है कि तुम राजकुमारी की खोज अकेले ही करोगे? लेकिन एक बात बताओ, क्या तुमने उसे पहले कभी देखा है? क्या तुम उसे पहचान पाओगे?"

युवक बराबर हाथ बांधे खड़ा रहा। "राजन, मेरी मां और मैं हर वर्ष राजकुमारी के जन्म दिवस पर निकलने वाले जुलूस को

देखा करते थे । मुझे विश्वास है कि मैं उसे कहीं भी पहचान लूंगा ।"

"लेकिन तुमने बताया नहीं कि तुम हो कौन ।" राजा ने फिर कहा ।

"मेरा नाम महेंद्रनाथ है, राजन्," युवक ने विनम्रता से कहा । "मेरी मां और मैं राजधानी से थोड़ी ही दूर, देवी के मंदिर के पास रहते हैं । वह मंदिर के लिए फूल चुनती है और देवता के लिए हार तैयार करती है । मैं हर सुबह काम की तलाश में निकल पड़ता हूं । हमें जो भी थोड़ी बहुत कमाई होती है, हम उससे खुश हैं । मैं अभी तीन वर्ष का भी नहीं था जब मेरे पिताजी चल बसे । हमारी देखभाल मेरे मामा और मामी ने की । लेकिन जब एक दिन अचानक मामी की मृत्यु, हो गयी, तो मामा बहुत उदास हो गया और हमें छोड़कर चला गया । हमें पता नहीं वह कहां गया है । लेकिन अब तक मैं बड़ा हो चुका था और काम करके कमा सकता था ।"

"इस तरह की खोज आसान नहीं होगी । यह समझ रहे हो न?" राजा ने पूछा ।

"मैं यह जानता हूं, राजन्," महेंद्रनाथ ने उसी प्रकार विनम्रता से कहा, "एक बार यदि मैं निकल पड़ा तो फिर मैं कई दिनों तक लौट नहीं पाऊंगा । जो खतरे मुझे उठाने पड़ेंगे, उनकी मुझे कोई चिंता नहीं । हां, चिंता है तो मुझे अपनी मां की । उसकी देखभाल कौन करेगा? इसी चिंता को लेकर मैं सेनाध्यक्ष के पास गया था और उनसे विनती की थी ।"

"हां, उग्रसेन ने मुझसे भी इसका ज़िक्र किया था ।" राजा वीरसेन ने कहा । "मान लो हम तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार कर लेते हैं । जब तुम लौटोगे, तब क्या तुम्हारी और मांगें भी होंगी? तुम्हें उचित पुरस्कार तो मिलेगा ही ।"

"मेरा आप विश्वास कीजिए, राजन्," महेद्रनाथ ने अपने स्वर में हलका रोष लाकर कहा, "मैंने पुरस्कारों के बारे में कभी सोचा ही नहीं । आखिर, मैं भी यहां का एक नागरिक हूं । क्या हर नागरिक का कर्त्तव्य नहीं बनता कि वह इस तरह की विपत्ति में उससे जो बनता है, करे? कई लोग ऐसे होंगे जो इस क्षेत्र से परिचित नहीं, लेकिन

मैं तो यहां के चप्पे-चप्पे से परिचित हूं। इसलिए मुझे लगा कि राजकुमारी को ढूंढ निकालना मुश्किल नहीं होगा। यदि मुझे यह आश्वासन मिल जाये कि मेरी अनुपस्थिति में मेरी मां की देखभाल ठीक ढंग से होगी, तो मैं बिना किसी चिंता के रवाना हो सकता हूं।"

"महेंद्रनाथ, हमें तुम्हारी यह प्रार्थना स्वीकार है," राजा ने उसे आश्वस्त किया, "तुम कब रवाना हो सकते हो?"

"मैं कल ही निकल पड़ूंगा, राजन्," महेंद्रनाथ ने उत्तर दिया। "मुझे किसी तरह की कोई तैयारी करने की ज़रूरत नहीं, सिवाय" उसने अपना वाक्य अधूरा छोड़ा।

"सिवाय? सिवाय क्या?" राजा ने पूछा।

"सिवाय क्या, महेंद्रनाथ?" उग्रसेन ने राजा की बात दोहरायी, "तुमने मुझे बताया नहीं था कि तुम्हें किसी प्रकार के संरक्षक की जरूरत नहीं पड़ेगी और तुम स्वयं ही सब कुछ निपटा लोगे?"

"हुजूर, मेरा और कोई अभिप्राय नहीं," महेंद्रनाथ अब सेनापति की तरफ मुड़ गया था। फिर वह राजा की तरफ मुड़ा और बोला, "राजन्, मैं तो राजकुमारी को पहचान ही लूंगा, लेकिन अगर वह मुझे मिल ही गयी तो मैं उसे कैसे विश्वास दिलाऊंगा कि आप ही ने मुझे भेजा है?"

"मैं तुम्हारी समस्या समझ रहा हूं, महेंद्रनाथ," राजा वीरसेन ने कहा, "तुम्हारा कहना ठीक है। वह तुम्हें नहीं जानती।"

"राजन्, हम इसे ऐसी कोई चीज़ नहीं दे सकते जिससे विद्यावती इसे पहचान ले।" सेनापति बीच में ही बोल पड़ा, "फ़र्ज करो, यह उसे खो देता है या वह इससे छिन जाती है, तब यह ठीक नहीं होगा न। इससे राजकुमारी को खतरा हो सकता है।"

"हां, उग्रसेन, मैंने इस पर विचार किया है," राजा ने कहा। "महेंद्रनाथ, मैं तुम्हें एक बात बताने जा रहा हूं। तुम उसे अपने तक ही रखना। मेरी बेटी के दायें कंधे पर बचपन से एक निशान है। केवल रानी और मुझे ही इसके बारे में पता है। अगर तुम राजकुमारी को यह पहचान बताओगे, तो वह निश्चय ही समझ जायेगी कि हममें से ही किसी ने तुम्हें यह बताया है। मेरा खयाल

है कि यह काफी होगा । लेकिन खबरदार, इसका किसी को भी पता न चले । अब तुम चलो, महेंदनाथ । काफी देर हो गयी है । उग्रसेन तुम्हारी मां के लिए हर तरह की व्यवस्था कर देगा । तुम इत्मिनान से कल अपनी यात्रा शुरू कर सकते हो । हां, यह याद रखना की हम तुम्हारी वापसी का बड़ी बेसब्री से इंतज़ार करेंगे । हमें राजकुमारी विद्यावती के बारे में कुछ न कुछ खबर मिलनी चाहिए ।" इन शब्दों के साथ ही राजा अपने आसन से उठा और भीतरी कक्ष में चला गया ।

किसी सेवक को बुलाने से पहले उग्रसेन ने महेंद्रनाथ से अपनी मां के साथ उससे भेंट करने को कहा । फिर उसने सेवक को आदेश दिया कि वह उसे महल के द्वार तक छोड़ आये ।

महेंद्रनाथ जब घर पहुंचा तो उसने देख कि उसकी मां मंदिर में संध्या की आरती के लिए हार बना रही है । "मां, तुम जानती हो? मैं अभी-अभी राजा से मिलकर आ रहा हूं ।"

"राजा वीरसेन से? क्या कहा तुमने? महल में?" उस महिला को अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था । महेंद्रनाथ की तरह सुबह-सुबह अपने घर से निकला था और मां ने यही समझा था कि उसका बेटा काम की तलाश में गया है । "क्या तुम्हें महल में नौकरी मिल रही है, मेरे बच्चे?"

"अभी नहीं, मां, बाद में हो सकता है" महेंद्रनाथ ने संक्षेप में उत्तर दिया । फिर अपनी बात पूरी करते हुए बोला, "राजा ने मुझे राजकुमारी की खोज में जाने की आज्ञा दे दी है । यदि मैं सफल रहा तो मैं महल में नौकरी भी पा सकता हूं ।"

"राजकुमारी की खोज?" मां ने प्रश्न किया । उसके स्वर में चिंता थी । "उसकी खोज कहां करोगे? कोई नहीं जानता कि वह कहां गयी है? या उसे कहां ले जाया गया है, और फिर महेंद्र तुम लौटोगे कब? मैं तो अकेली रह जाऊंगी ।"

"चिंता न करो, मां," महेंद्र ने अपनी मां को शांत करते हुए कहा, "जैसे ही मुझे राजकुमारी के बारे में कुछ पता चला, मैं
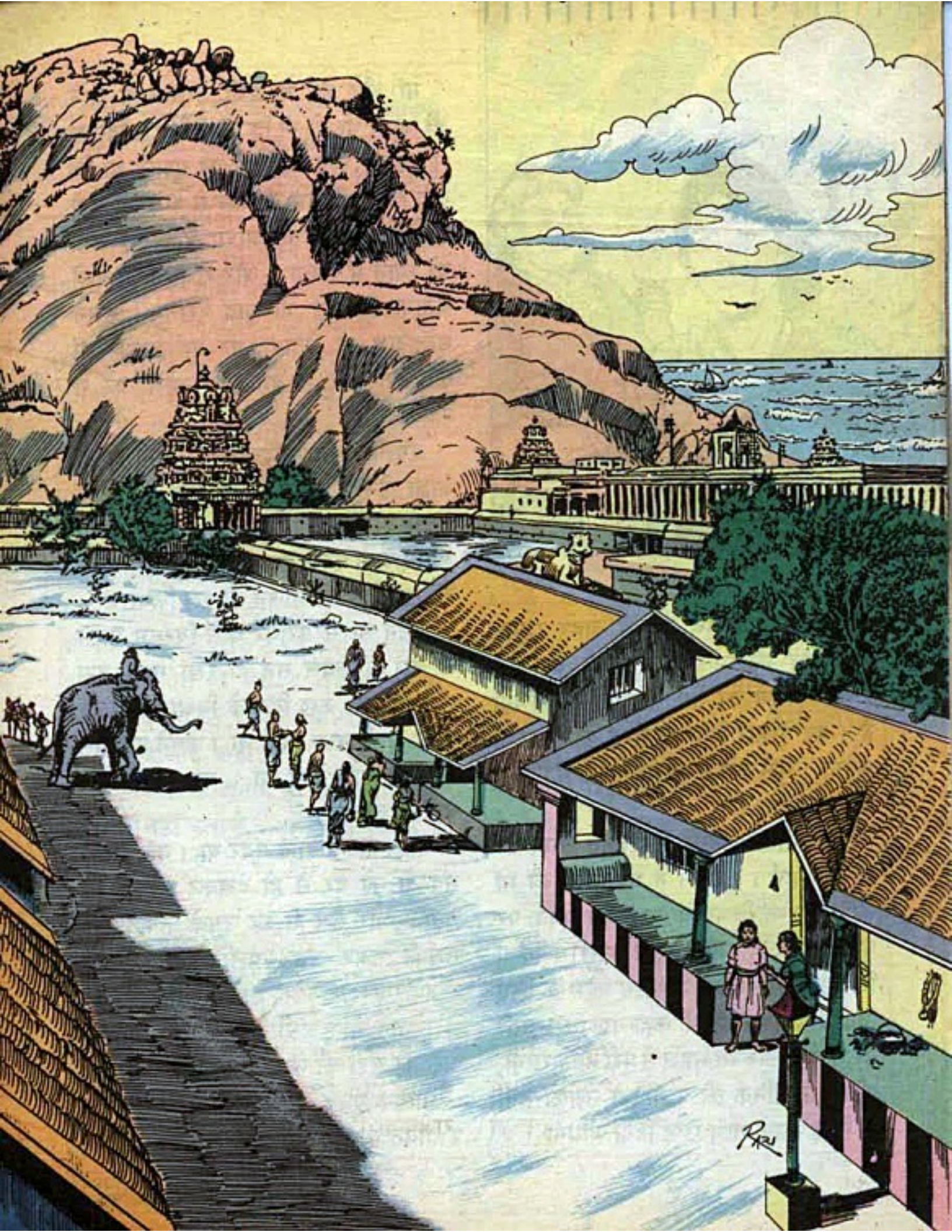
लौट जाऊंगा । जब तक मैं बाहर रहूंगा, राजमहल की ओर से तुम्हारी देखभाल होगी । शाम को हमें सेनापति से मिलना है । वह तुम्हारे लिए हर तरह की व्यवस्था करेगा । मुझे कल सुबह हर हालत में निकल पड़ना चाहिए ।"

सेनापति से उनकी भेंट बहुत थोड़ी देर के लिए हुई । उग्रसेन ने महेंद्रनाथ की मां को आश्वस्त किया कि उन्हें इस युवक पर पूरा भरोसा है, और उससे अनुरोध किया कि वह खुशी-खुशी उसे इस काम के लिए विदा दे । उससे यह भी कहा गया कि उसकी हर रोज़ की ज़रूरतें महल से पूरी होती रहेंगी, और एक सैनिक की पत्नी को उसकी सेवा के लिए उसके साथ छोड़ दिया जायेगा ।

मां और बेटे ने अभी उग्रसेन से जाने की आज्ञा भी ली थी कि उग्रसेन ने महेंद्रनाथ से कहा, "राज ज्योतिषी का सुझाव था कि यदि खोज पश्चिम की ओर से शुरू की जाये तो फल मिलने की आशा है । इस बात को ध्यान में रखना । और राजा ने जो तुम्हें बताया है, उसे भी याद रखना," उसने महेंद्रनाथ को चेताया, पर वह उसकी मां की उपस्थिति में वह बात खोल कर न कह सका ।

अगली सुबह महेंद्रनाथ ने अपनी मां से आज्ञा लेने से पहले उसके पांव छुए और उससे आशीर्वाद प्राप्त किया, और फिर वह अपनी यात्रा पर निकल पड़ा । साथ में उसने दो-एक दिन का भोजन भी रख लिया ।

उसने सारस सरोवर वाले विश्राम महल के बारे में केवल सुन ही रखा था । वहां राज परिवार कुछ दिन के विश्राम के लिए कभी-कभी चला जाता था । उसने इसे पास से कभी नहीं देखा था । वह पहली बार वहां पहुंचा था ।

महल वाकई बहुत सुंदर था । वह उसकी सुंदरता को दूर से ही देखकर चकित रह गया । और जैसे ही वह उसके निकट हुआ उसकी नज़र उस स्थल पर पड़ी जहां राजपरिवार के लोग नाव पर सवार होते थे । नाव वहां बंधी हुई थी और नाविक पास की झड़ी की छाया में बैठा था ।

नाविक युवक की शक्लो-सूरत से बहुत प्रभावित हुआ । क्या वह राजमहल से कोई

संदेशा लाया है? वह सोच रहा था । लेकिन इसके साथ ही उसने खड़े होकर युवक का अभिवादन किया । "श्रीमान्, क्या आप राजमहल से आये हैं?"

"नहीं, तुमने यह प्रश्न क्यों किया?" महेंद्रनाथ ने जिज्ञासा प्रकट की ।

"मैं सिर्फ यह सोच रहा था कि शायद राजकुमारी के बारे में कोई खबर मिली हो," नाविक ने उत्तर दिया । "यदि वह लौट आयी है, या उसका पता चल गया है तो रानी की दासी को विश्राम महल से वापस राजमहल जाने की इजाज़त मिलनी चाहिए, बेचारी बुढ़िया । जबसे राजकुमारी ग़ायब हुई है, उसे अकेली को ही यहां रहना पड़ रहा है । दिन में राजमहल से एक या दो दासियां आती हैं और उसके लिए खाना ले आती हैं । ऐसे ही जैसे वे राजकुमारी के समय में करती थीं । फिर एक-दो घंटे यहां बिताकर वे लौट जाती हैं ।"

"जहां तक मैं जानता हूं, राजकुमारी का अभी पता नहीं चला है," महेंद्रनाथ ने कहा । "दरअसल इसी लिए मैंने उसका पता लगाने की ठान ली है । कल ही मुझे राजा से इसके लिए आज्ञा मिली है ।"

"तुम बहुत बहादुर दिखते हो, मित्र," नाविक ने कहा, "लेकिन तुम उसे ढूंढोगे कहां? कोई नहीं जानता कि वह कहां गयी है । लेकिन एक बात पक्की है, वह इधर से नहीं गयी । उसे झील के किसी और हिस्से से ले जाया गया है । झील, चारों ओर, काफी गहरी है । हां, इस स्थल और विश्राम महल के बीच यह उतनी गहरी नहीं है । लेकिन इधर से तो केवल राजा और रानी ही जा सकते हैं ।"

"मुझे झील के साथ-साथ जाना चाहिए और मैं यह देखना चाहता हूं कि क्या कोई ऐसी जगह भी है जहां इस झील से होकर भीतर पहुंचा जा सकता है? यदि मुझे कोई ऐसी जगह नहीं मिली, तो मैं यहां लौट आऊंगा । अच्छा, चलता हूं ।"

"ईश्वर तुम्हें सफलता दे, ।" नाविक ने उसे आशिष देते हुए कहा । (जारी)

# आकाश को छूती छड़ी

एक ज़मींदार के यहां दो विदूषक थे । उनका नाम राजू और दिनेश था । एक दिन राजू और दिनेश ज़मींदार के साथ गांव के बाहर टहलने गये । वहां पर दूर-दूर तक खेत फैले हुए थे और उनमें हरियाली लहलहा रही थी । राजू ने उन्हें देखकर अपनी आंखों में आंसू भर लिये और कहने लगा, "एक ज़माना था, श्रीमान, जब ये तमाम खेत मेरे पड़दादा के हुआ करते थे ।"

दिनेश राजू से कहां पीछे रहने वाला था । उसने भी अपनी बात उछाली, "हां, श्रीमान, राजू बिलकुल ठीक कहता है । जिस समय इसके पड़दादा के पास इतने सारे खेत हुआ करते थे, उस समय मेरे पड़दादा यहां वर्षा की व्यवस्था करते थे । उनके पास एक बहुत लंबी छड़ी थी । वह अपनी उस छड़ी से बार-बार आकाश में तैर रहे बादलों को हांक-हांक कर इकट्ठा करते और फिर उनसे जहां चाहते बारिश करवाते ! वह छड़ी क्या थी, एक चमत्कार ही समझिए । साक्षात इंद्र का वज्रायुध ।"

"इतनी लंबी छड़ी? कहां रखते थे तुम्हारे पड़दादा उसे?" ज़मींदार को दिनेश की बात पर हंसी आ गयी थी ।

"वह साधारण छड़ी नहीं थी, श्रीमान्, वह तो मेरे पड़दादा की निजी छड़ी थी । उसे वह राजू के पड़दादा के खेतों में छिपा कर रखते थे ।" दिनेश ने अपनी आवाज़ में कुछ-कुछ नाटकीयता लाकर कहा ।

"अच्छा । अब वह कहां है?" ज़मींदार ने किसी तरह अपनी हंसी रोकते हुए पूछा ।

"श्रीमान्, कहते हैं न कि गुस्सा बुरी बला है । एक बार मेरे पड़दादा को मेरी पड़दादी पर किसी बात को लेकर गुस्सा आ गया । बस, उन्होंने आव देखा न ताव, अपनी वह छड़ी उठायी और लगे बादलों को उससे कोंचने । परिणाम यह हुआ कि तीन दिन और तीन रात लगातार मूसलाधार बारिश होती रही और ज़बरदस्त बाढ़ आ गयी । वह छड़ी शायद उसी बाढ़ में बह गयी और फिर चट्टानों से टकराकर टुकड़े-टुकड़े हो गयी ।" दिनेश ने दुःखी स्वर में कहा ।

दिनेश की बात सुनकर राजू तुरंत बोला, "श्रीमान, जैसे ही वह छड़ी गायब हुई, वैसे ही बारिश का होना हमेशा के लिए बद हो गया । इस पर मेरे पड़दादा खीझ उठे । उन्होंने उस खीझ में वे सारे खेत लोगों में बांट दिये और हमारे लिए दो बीघा खेत भी न छोड़े ।"

राजू और दिनेश की कहानी सुनकर ज़मींदार हंसते-हंसते लोट-पोट हो गया । वह उनसे बहुत प्रसन्न हुआ । इसलिए उसने उनके बीच ढेर सारे खेत बांट दिये ।

—लक्ष्मी विद्या

# कूबर कथा

अपनी धुन का पक्का राजा विक्रम हमेशा की तरह उस पेड़ के पास गया, उसकी शाखा से लटकती लाश को उसने उतारा और उसे अपने कंधे पर डालकर पहले की तरह श्मशान में से गुज़रने लगा । तब उस लाश में मौजूद बैताल बोला, "राजन्, आप इस तरह आधी रात को इतना जो श्रम उठा कर श्मशान में भटक रहे हैं, यह बात मेरी समझ में नहीं आती । शायद आप सम्राट् बनना चाहते हैं । अगर आपकी यही इच्छा है तो इस इच्छा की पूर्ति के लिए आपको दृढ़ संकल्प रहना होगा । ऐसा दृढ़ संकल्प हर किसी के बस का नहीं होता । इसे कुछ ही महासत्व निभा पाते हैं । कभी-कभी तो ऐसे महासत्व भी अपनी प्रवृत्तियों के कारण अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में विफल रहते हैं । अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए मैं आपको कूबर नाम के एक तांत्रिक की कहानी सुनाता हूं । आप इसे ध्यान से सुनिए

## बैताल कथाएं

ताकि आपको थकान महसूस न हो ।" और फिर बैताल कहानी सुनाने लगा ।

अवंती की राजकुमारी स्वर्णलता अपूर्व सुंदरी थी । उसके सौंदर्य की ख्याति चारों दिशाओं में फैल चुकी थी । इसलिए अनेक राज्यों से उसके यहां विवाह के प्रस्ताव आते थे । एक दिन स्वर्णलता ने अपने पिता से कहा, "अपने विवाह के विषय में मैं कोई निर्णय नहीं ले पा रही हूं । अब मैं आपके निर्णय का ही पालन करूंगी । आप ठीक से विचार कर लीजिए कि किस राज्य से हमें अपने संबंध सुधारने हैं । मैं वहीं के राजकुमार से विवाह करने को तैयार हूं ।"

बेटी की बात सुनकर राजा बोला, "मैं निहार राज्य के युवराज से तुम्हारा विवाह करना चाहता हूं ।"

पिता का प्रस्ताव सुनकर स्वर्णलता का चेहरा फ़क पड़ गया । निहार राज्य का युवराज तो दुष्ट और नीच था ही, काफी बदसूरत भी था ।

राजा ने जब अपनी बेटी के चेहरे का रंग उड़ा देखा तो उसने झट अपनी बात बदल दी, "मुझे पता चला है कि तुम क्विदेह के राजकुमार चित्रसेन को बहुत पसंद करती हो । तुम देश के भविष्य की चिंता छोड़ो, और उससे विवाह करके सुखी रहो ।"

स्वर्णलता ने अपना सर नकारात्मक ढंग से हिलाते हुए कहा, "मैं पहले अपने राज्य से प्यार करती हूं, बाद में किसी और के बारे में सोच सकती हूं । इसलिए मैं निहार के युवराज से ही विवाह करूंगी ।"

बेटी की बात सुनकर राजा को बहुत खुशी हुई । उसने मृदु स्वर में कहा, "तुम्हारे भीतर अपने राज्य के प्रति यह जो भक्ति-भाव कूट-कूट कर भरा हुआ है, मैं उसकी सराहना किये बिना नहीं रह सकता । तुम जैसी उत्तम स्वभाव वाली के साथ कभी अन्याय नहीं हो सकता ।" और यह कहकर राजा वहां से चला गया ।

उधर चित्रारण्य में कूबर नाम का एक तांत्रिक रहता था । उसने छोटे-मोटे देवी देवताओं की अराधना करके कई प्रकार की सिद्धियां प्राप्त कर ली थीं, और चाहने लगा था कि वह समूचे भूमंडल का स्वामी बने । एक देवता ने उसे सुझाया कि वह स्वर्णलता

से विवाह करे, वरना उसकी यह इच्छा कभी पूरी नहीं होगी। उसने उसे एक बात और बतायी। उसने कहा कि स्वर्णलता से उसका विवाह स्वर्णलता की मर्जी से होना चाहिए। अगर उसने किसी तरह से भी ज़ोर-जबर किया तो उसकी तमाम सिद्धियां नाकाम हो जायेंगी और वह पूरी तरह से कंगाल हो जायेगा।

कूबर अपनी सिद्धि के बल पर वहां से अदृश्य हो गया और फिर वह स्वर्णलता के अन्तःपुर में जा प्रकट हुआ। उस समय स्वर्णलता अपने पलंग पर गाढ़ी निद्रा में थी। कूबर ने जब उसका सौंदर्य इतने करीब से देखा तो वह हक्का-बक्का रह गया। आज तक वह सार्वभौम होने के लिए स्वर्णलता से विवाह करना चाहता था, लेकिन अब उसे लगा कि इसके साथ विवाह करना ही सार्वभौम होने के समान होगा और उसका नाम दिग्दिगंत में बजने लगेगा।

सुबह जब स्वर्णलता नींद से जगी तो कूबर को अपने सामने पा कर घबरा गयी। कूबर ने उसकी घबराहट भांपते हुए कहा, "सुंदरी, तुम घबराओ नहीं। मेरे हाथों तुम्हारा किसी प्रकार से अपकार नहीं होगा। मैं, दरअसल, तुमसे प्यार करता हूं और इसीलिए मैं यहां आया हूं," और यह कहकर उसने उसे अपनी सारी कहानी कह सुनायी।

कूबर की कहानी सुनकर स्वर्णलता बोली, "मैं राजकुमारी हूं। मेरा विवाह किसी राजकुमार के साथ ही हो सकता है। तुम

ठहरे एक तांत्रिक। तुम्हारे साथ मेरा विवाह कैसे हो सकता है?"

स्वर्णलता की बात सुनकर कूबर हंस दिया और कहने लगा, "तुम मेरी शक्ति से परिचित नहीं हो, इसीलिए तुम ऐसा कह रही हो। अगर तुम मुझ से विवाह कर लोगी तो संसार के सारे सुख तुम्हारे होंगे, और अगर तुमने आनाकानी की तो तुम्हारा और तुम्हारे इस राज्य का सर्वनाश भी हो सकता है।"

कूबर की इस धमकी से स्वर्णलता डर गयी। थोड़ी देर वह सोचती रही और फिर बोली, "ठीक है। मेरी तीन शर्तें हैं। अगर तुम उन्हें पूरा कर दो तो मैं तुमसे विवाह कर लूंगी। यदि तुम वे शर्तें पूरी न करके

मेरे राज्य को बरबाद करने पर उतारू हो गये तो मैं इससे पहले अपना काम तमाम कर लूंगी ।"

कूबर को स्वर्णलता की इस धमकी ने हिला दिया । मजबूर होकर बोला, "चलो, बताओ तुम्हारी शर्तें क्या हैं?"

"हमारे राज्य में दो धर्मावलंबी हैं । वे अपने-अपने संप्रदाय की डींग मारते हैं और हर समय दुष्कर्मों में लगे रहते हैं । इससे राज्य की शांति भंग होती है । तुम उनमें परिवर्तन लाओ । उनमें विनम्रता भरो । उन्हें सही रास्ते पर लाओ । यही मेरी पहली शर्त है ।" स्वर्णलता ने कहा ।

"और तुम्हारी दूसरी शर्त? उसे भी ज़रा विस्तार से बता दो ।" कूबर ने अपनी असमंजस दबाते हुए कहा ।

"मेरे पिता ने प्रजा की भलाई के लिए कई कानून बनाये और उन्हें लागू करने के लिए कई कर्मचारियों की नियुक्ति की । लेकिन वे कर्मचारी अधिकतर भ्रष्ट ही निकले । तुम्हें उनका पता लगाना होगा और फिर उन्हें सुधारना होगा । यह मेरी दूसरी शर्त है ।" स्वर्णलता ने कहा ।

कूबर की असमंजस अब और बढ़ गयी थी । वह अपने विचारों में खोया हुआ था कि स्वर्णलता फिर बोली, "निहार राज्य का राजकुमार बहुत ही दुष्ट और नीच है । वह धमकी देता है कि यदि मैंने उसके साथ शादी नहीं की तो वह हमारे राज्य को नष्ट कर देगा । तुम निहार के राजकुमार में किसी तरह सद्‌गुण पैदा करो । यही मेरी तीसरी शर्त है ।"

स्वर्णलता की तीसरी शर्त सुनकर कूबर एकदम चौंक उठा, और कहने लगा, "इसका मतलब तो यह हुआ कि तुम चित्रसेन से ही शादी करोगी । मान लो मैं तुम्हारी शर्तें पूरी करता हूं, तब क्या तुम अपना वचन निभाओगी?"

"मेरे राज्य का हित मेरे लिए सर्वोपरि है । इसी लिए मैंने निहार के युवराज से विवाह करने के लिए हामी भर दी थी । अगर तुम मेरी ये शर्तें पूरी कर दो तो मैं तुमसे ही शादी करूंगी, क्योंकि इनके पूरा हो जाने से मेरे राज्य का भला होगा ।" स्वर्णलता का उत्तर तर्कपूर्ण था ।

"ठीक है, तो अब मैं चलता हूं। जब तक मैं लौटूं नहीं, तुम किसी और से शादी नहीं करोगी। मैं तुम्हारे गले में यह माला डाले दे रहा हूं। अगर तुम मेरी अवहेलना करके किसी और से शादी करने का मन में विचार भी लाओगी तो यह माला सर्प बन कर तुम्हें स्पर्श करने वाले को डंस लेगी, और तुम उसकी जान से हाथ धो बैठोगी। मेरे अलावा और कोई इस माला को तुम्हारे गले से हटा भी नहीं सकेगा।" और यह कहकर कूबर ने स्वर्णलता के गले में वह माला डाल दी और स्वयं वहां से एकाएक ग़ायब हो गया।

अंतःपुर से कूबर सीधा अपने उपासना मंदिर में पहुंचा। वहां उसे अपने सभी देवी-देवताओं का आह्वान किया और जब वे उसके सामने प्रकट हुए तो उसने उन्हें राजकुमारी की शर्तें बतायीं।

राजकुमारी की शर्तें सुनकर वे देवी-देवता बोले, "अब तक हमारे सामने कभी किसी ने ऐसी इच्छा व्यक्त नहीं की थी। चलो, तुम्हारे कारण हम भी पुण्य कमा लेंगे। हम अपनी सभी शक्तियां तुम्हें दिये दे रहे हैं। लेकिन तुम अपने कार्य की सिद्धि के लिए प्रेम की देवी की अराधना भी करो। तब तुम्हें प्रदान की गयी हमारी शक्तियां और कारगर होंगी, और तुम्हारे सामने दुनिया की कोई भी शक्ति टिक नहीं पायेगी। हां, एक बात याद रखो—हमने जो शक्तियां तुम्हें प्रदान की हैं, उनसे तुम किसी व्यक्ति

पर भौतिक रूप से ही विजय पा सकते हो, उसका मन जीतना चाहो, तो तुम्हें प्रेम की ज़रूरत पड़ेगी। आशा है तुमने हमारी बात समझ ली होगी। तुमने जिस काम का बीड़ा उठाया है, वह मन को जीतने से संबंध रखता है।"

कूबर ने तुरंत प्रेम की देवी का आह्वान किया। शीघ्र ही देवी उसके सामने प्रकट हुई और बोली, "बिना प्रेम के तुम्हारी इच्छा की पूर्ति नहीं हो सकती। लेकिन तुम घोर नीच और स्वार्थी हो। इसलिए तुम्हारे भीतर प्रेम का अंकुर प्रस्फुटित करने के लिए काफी समय लगेगा। पर तुम्हारी कार्य-सिद्धि के लिए मैं तुम्हारा पूरा-पूरा ख्याल रखूंगी। बताओ, क्या तुम्हें यह स्वीकार है?"

ने भगवान् की महिमा का बखान करना शुरू किया, सब को अपने-अपने धर्म का महत्व समझाया और उसमें उनका विश्वास और दृढ़ करते हुए बोला, "यह अलग बात है कि तुम्हारी आस्था तुम्हारे भगवान् में किस रूप में है । समझने की बात यह है कि तुम सब आपस में भाई-भाई हो । तुम्हें आपसी वैर-भाव छोड़ना होगा । तुम्हारे बीच तुम्हारे वैमनस्य को देखकर मुझे दुख होता है । तुम भविष्य में ऐसा कोई काम न करो जिससे मुझे दुःख हो ।"

धीरे-धीरे लोगों में परिवर्तन आने लगा । लगता था कूबर की बातों का उन पर गहरा असर पड़ा है । अब वहां लोगों में आपसी द्वेष मिट गये थे और उनकी भ्रष्टाचार की वृत्ति खत्म होती जा रही थी । लोगों की एक प्रकार से नयी ज़िंदगी हो गयी थी ।

अपने राज्य के लोगों में परिवर्तन लाने के बाद कूबर अब दूसरे राज्यों में भी अपने कार्य का प्रचार-प्रसार करने लगा । वह जहां भी जाता, उसकी ख्याति पहले ही वहां पहुंची होती । लोगों में प्रेम धीरे-धीरे अपनी गहरी जड़ें जमाता जा रहा था । और तो और, निहार राज्य का युवराज भी कूबर का भक्त बन गया था और उसके व्यवहार में अद्भुत सुधार हो गया था ।

इस प्रकार काफी कम समय में ही कूबरने स्वर्णलता की सभी शर्तें पूरी कर लीं और फिर उसके पास लौट गया ।

कूबर को अपने सामने पाकर स्वर्णलता

कूबर ने खुशी-खुशी इसके लिए अपनी स्वीकृति दे दी । इसके बाद वह वहां से लोगों के बीच पहुंचा और उनसे बोला कि उसमें देवता का अंश है, इसके साथ ही उसने अपनी कुछ सिद्धियों का प्रदर्शन भी किया जिससे लोग उसकी ओर आकृष्ट हुए ।

कुछ ही दिनों में चारों ओर उसके कई अनुयायी हो गये । वैसे भी कूबर में अब काफी परिवर्तन आ चुका था । उसने अनेक अच्छे काम किये । कई लोगों को उसने उनके असाध्य रोगों से छुटकारा दिलाया । अंधों की आंखों में रोशनी लौटायी । गरीबों को उनकी गरीबी से मुक्त किया । सूखी ज़मीन को सींच कर उसे उपजाऊ बनाया । इससे चारों ओर फसलें लहलहा उठीं । फिर कूबर

उसके पांवों पर गिर पड़ी और बोली, "तुम तांत्रिक नहीं, तुम सचमुच के भगवान् हो। तुमने, मेरे लिए असाध्य कार्यों को साधा है। एक साधारण मानव के लिए यह संभव नहीं था। तुमसे विववाह करके मैं अपने को धन्य समझूंगी। मुझे तुम्हारी स्वीकृति चाहिए।"

स्वर्णता का अनुनय सुनकर कूबर हंसते हुए बोला, "मैं तुमसे शादी करने के लिए नहीं लौटा। मैं तो तुम्हें आज़ाद करने के लिए आया हूं। मैं तुम्हारे गले से अब यह मोतियों की माला उतारे दे रहा हूं।"

कूबर की बात सुनकर स्वर्णलता सकते में आ गयी और कहने लगी, "क्या अब तुम मुझसे प्यार नहीं करते?"

कूबर का स्वर गंभीर था। उसने उत्तर में कहा, "ज़ब मैं तांत्रिक के रूप में था, तब मैंने तुमसे विवाह करने की बात ज़रूर सोची थी। लेकिन अब मैं वह नहीं हूं। मैं अब देवताओं का अंश हूं। इसलिए तुम्हारे और मेरे बीच अनुराग नहीं हो सकता। मैं, बस, अब इतना ही चाहता हूं कि तुम्हारा प्रेम परवान चढ़े और तुम्हारे साथ किसी तरह का अन्याय न हो। तुम विदेह के राजकुमार चित्रसेन से विवाह कर लो और सुख-चैन से रहो।" और यह कहकर कूबर ने राजकुमारी स्वर्णलता के गले से वह माला उतार ली जो उसने उसे अपने वश में रखने के लिए पहनायी थी। फिर वह शांतचित्त हो वहां से चला गया।

बैताल की कहानी खत्म हो चुकी थी। उसने कहा, "राजन्, कई तकलीफें उठाकर अपने देवीदेवताओं की अराधना करके कूबर ने सारी पृथ्वी पर छा जाने के सपने देखे थे। वे सपने जब साकार होने को आये, तब उसने स्वर्णलता को अपनी जकड़न से एकदम मुक्त कर दिया। वह अब अपने आपको देवताओं का अंश कहने लगा था। क्या यह उसका अज्ञान नहीं था? क्या हम इसे उसका अहंकार कहें? और यह भी तो हो सकता है कि स्वर्णलता की शर्तें पूरी करने के प्रयास में उसने जो प्रेम और भाईचारे की रट लगानी शुरू की थी, वह उसके भीतर ही उतर गयी हो। दूसरे शब्दों में वह अब एक साधारण व्यक्ति नहीं रहा था। आप

मेरे इन संदेहों का निराकरण करें। यदि आप इनका निराकरण जानते हुए भी उत्तर देने के लिए अपना मुंह नहीं खोलेंगे तो आपका सर फट जायेगा।"

राजा विक्रम को अब बोलना ही पड़ा, "कूबर एक स्वार्थी और अधिकार-प्रिय व्यक्ति था। इसलिए वह जिन देवी-देवताओं की आराधना करता था, वे देवी-देवता क्षुद्र कहलाते थे। लेकिन जब उसने स्वर्णलता से प्रेम करना शुरू किया तो उसकी आराध्य प्रेम की देवी बन गयी। इस तरह उसके पास जो भी सिद्धियां थीं, वे अच्छे कामों में लगने लगीं। यानी वे देव-शक्तियां बन गयीं। इस असलियत को जब उसने समझ लिया तो उसने कहना शुरू कर दिया कि वह देवांश है। यानी उसमें देवता का अंश है। उसकी इस उक्ति में अज्ञान या अहंकार कहीं भी नहीं था। दुर्बल व्यक्ति ही हमेशा दया, और प्रेम जैसे शब्दों की रट लगाते हैं। इसका कारण उनकी मानसिक दुर्बलता ही समझना चाहिए। लेकिन ऐसी दुर्बलता को अभूतपर्व शक्ति वाले कूबर के साथ जोड़ना न्यायोचित नहीं दिखता। ऐसा कहना तो भद्दा मज़ाक ही कहलायेगा। कूबर पहली और दूसरी शर्त पूरी करते समय शक्ति-संपन्न था। जब वह तांत्रिक था तब वह अपनी शक्ति के बल पर समूचे भूमंडल का स्वामी बनना चाहता था। तभी उसने स्वर्णलता की तरफ अपना हाथ बढ़ाया था। लेकिन जब वह उसकी शर्त पूरी करने के लिए थोड़ा आगे बढ़ा तो उसके अपने भीतर एक ज़बरदस्त परिवर्तन हुआ और वह खोटे सोने से खरा सोना बन गया। इसीलिए उसने अन्याय से बचने के लिए अपने विवाह का प्रस्ताव वापस ले लिया और उसे अपने प्रेमी से विवाह करने के लिए आज़ाद कर दिया।"

बैताल को उत्तर देने से राजा विक्रम का मौन भंग हो गया था। इसलिए बैताल लाश समेत वहां से ग़ायब हो गया और फिर पहले की तरह उसी पेड़ की शाखा से जा लटकने लगा। (कल्पित)

[आधार : वसुंधरा की रचना]

# चन्दामामा परिशिष्ट-४६

<u>भारत के पशु-पक्षी</u>

## वह सुंदर काला हिरन

भारत में बारहसिंगे की चार किस्में पायी जाती हैं । वे हैं चिंकारा या भारतीय मृग, काला हिरन या भारतीय बारहसिंगा, चौसिंगा या चार सींग वाला हिरन और नीलगाय या नीला सांड । काला हिरन इन में सब से सुंदर होता है । भारत की बारहसिंगा नस्ल का यह अकेला प्रतिनिधि है । इस जीव की सबसे बड़ी विशिष्टता इसकी काली-सफ़ेद, चमकीली खाल है । नर के सींग बल खाये होते हैं । कंधे तक इनकी ऊंचाई लगभग ८० सेंटीमीटर होती है और वजन लगभग ४० किलोग्राम । इनकी नज़र बहुत तेज़ होती है, लेकिन इनकी सूंघने और सुनने की शक्ति कुछ कमज़ोर होती है ।

एक वक्त था जब काला हिरन भारत में सब जगह पाया जाता था, लेकिन अब यह गुजरात, राजस्थान और पंजाब तक ही सीमित रह गया है । दक्षिण में यह मद्रास के गिंडी राष्ट्रीय उद्यान में ही पाया जाता है । इस उद्यान में इसे लाने वाला वहां का उस समय का गवर्नर था । यह बात १९२४ की है ।

चौपायों में यह प्राणी सबसे तेज़ दौड़ता है । जिस समय यह उछलता-कूदता हुआ आगे बढ़ता है, उस समय इसकी छटा देखते ही बनती है ।

# अंतहीन कहानी

मद्रास से प्रकाशित होने वाली एक लोकप्रिय पत्रिका ने कहानी सुनाने की प्रतियोगिता आयोजित की। उसमें भाग लिया लगभग ९०० बालकों ने। छंटनी होकर आखिरी दौर के लिए उनमें से केवल लगभग ५० बालक ही बचे। आखिर, तेरह बालकों को-जिन्हें कहानी सुनाने की कला में अद्भुत पाया गया, पुरस्कार के लिए चुना गया। एक पुरस्कार ५ वर्षीय दीपक को मिला। प्रतियोगिता में शामिल होने वाले बालकों में केवल वह ही बाधित था, यानी वह ठीक से बोल नहीं पाता था, और न ही उसके हाथ ठीक से चलते थे।

अपनी इस कमी के बावजूद दीपक श्रीनिवासन कहानी पर कहानी सुनाता गया। उसकी कहानियां तेनालीराम, कृष्ण देवराय, बीरबल तथा अकबर को लेकर बुनी गयी थीं और उसकी गज़ब की याद्दाश्त में वे अपनी तमाम बारीकियों के साथ ज्यों की त्यों कायम थीं।

दीपक स्पास्टिक सोसाइटी ऑफ इंडिया की मद्रास शाखा द्वारा चलाये जा रहे विशेष शिक्षा केंद्र में पढ़ता है, जहां उसे हमारे विशिष्ट बालकों में अति विशिष्ट का दर्जा मिला है। वह उस केंद्र में हर रोज़ इलाज के लिए जाता है। इसमें उसे आनंद मिलता है, हालांकि कभी-कभी वह थक भी जाता है, क्योंकि उसे एक कक्ष से दूसरे कक्ष में ले जाया जाता है, लेकिन जितना कष्ट वह झेलता है, उसे वह ज़ाहिर नहीं होने देता।

दीपक टी.वी. देखने का बहुत शौकीन है। फिल्मी गीतों का तो वह कोई भी कार्यक्रम नहीं छोड़ता। वह बड़ी आसानी से उनकी धुनें पकड़ लेता है और उन्हें गुनगुनाने की कोशिश करता है। आम तौर पर वह कामयाब ही रहता है। लेकिन उसका प्रिय कार्यक्रम है, "द वर्ल्ड दिस वीक" और उसे उसका एक-एक अंश याद रहता है। वह कई दिन बीत जाने पर भी उन्हें नहीं भूलता। विवरणों के लिए तो उसकी याद्दाश्त का कोई मुकाबला नहीं। परिवार के जितने मित्र हैं, उन सब के नाम वह फर-फर बोलता है। उनके पते और उनके टेलीफोन नंबर भी वह बताना नहीं भूलता।

दीपक को अब कर्नाटक संगीत सिखाया जा रहा है ताकि उसकी वाक्शक्ति में उन्नति हो। कर्नाटक संगीत उसे पसंद भी है। खेलों में उसे क्रिकेट, फुटबाल तथा टेनिस पसंद हैं। टी.वी. पर वह उन्हें बराबर देखता है। कपिल देव का तो वह सौदाई है।

चमकीली आंखों और कुशाग्र बुद्धि वाला यह बालक अपनी उम्र के अन्य बालकों की तरह चॉकलेट, केक, तथा आइस क्रीम पसंद करता है। अंगरेजी में ये तीनों शब्द "सी" से शुरू होते हैं। क्योंकि उसके हाथ ठीक से काम नहीं करते, इसलिए वह आसानी से लिख नहीं सकता, वरना वह अपनी कहानियां पत्रिकाओं में प्रकाशन के लिए भेजता।

# क्या तुम जानते हो?

१. पहले पहल किस नगर में साहित्यिक सभा हुई?
२. पहली बार हिंदी में रामायण किस ने लिखी?
३. कलकत्ता के बनस्पति उद्यान की विशिष्टता क्या है?
४. फारसी की एक कहानी में पिता और पुत्र लड़ते-लड़ते खत्म हो जाते हैं, लेकिन उन्हें एकदूसरे के बारे में आखिर तक पता नहीं चलता । वे कौन थे?
५. नौवीं लोकसभा के चुनाव ने एक मिसाल कायम की । इसकी सबसे निराली बात क्या थी?
६. पंडित नेहरू राष्ट्रीय कांग्रेस के कितनी बार अध्यक्ष चुने गये?
७. इंग्लिश वर्णमाला में २६ अक्षर हैं । यूरोप की दो अन्य भाषाओं के भी उतने ही अक्षर हैं । वे भाषाएं कौन सी हैं?
८. लंका का एक योद्धा भारत आया । रामनाड में उसने चोलों को पराजित किया और मदुरै में एक पांड्य शासक को सत्तारूढ़ किया । वह योद्धा कौन था?
९. दिल्ली के एक सुल्तान की पोलो खेलते समय मृत्यु हो गयी । वह सुल्तान कौन था?
१०. राजा रणजीत सिंह के प्रिय घोड़े का नाम क्या था?
११. गंगा और यमुना के अलावा तीन और पवित्र नदियों पर कुंभ मेले लगते हैं । वे नदियां कौन सी हैं?
१२. सिख अपने दो गुरुओं के जन्मदिन बड़ी धूम-धाम से मनाते हैं । उन गुरुओं के नाम क्या हैं?
१३. सांड के साथ लड़ाई में लड़ाई खत्म हो जाने पर लड़ाई करने वाले को सबसे बड़ा सम्मान क्या मिल सकता है?
१४. बंगलौर के शास्वती संग्रहालय की विशिष्टता क्या है?
१५. भारत का पहला आर्चबिशप कौन था?

## उत्तर

१. मदुरै-तमिल संगम ।
२. तुलसीदास-रामचरितमानस ।
३. एशिया में यह सबसे बड़ा है ।
४. रुस्तम और सोहराब ।
५. मतदान की उम्र घटाकर १८ वर्ष कर दी गयी । पहली बार संसद में किसी भी दल को पूर्ण बहुमत न मिल पाने के कारण यह "लटकी" रह गयी ।
६. सात बार ।
७. जर्मन और डच ।
८. पराक्रमबाहु ।
९. कुतुबुद्दीन ऐबक ।
१०. लैली ।
११. नर्मदा, कावेरी और गोदावरी ।
१२. गुरुनानक देव तथा गुरु गोविंद सिंह ।
१३. सांड के दो कान और पूंछ ।
१४. भारत में महिलाओं के बारे में यह पहला संग्रहालय था ।
१५. बिशप जुवान डी अल्बूकर्क ।

# चंदामामा की खबरें

## ऊंची से ऊंची कीमत

दुर्लभ टिकटों के ऊंचे से ऊंचे दाम मिलते हैं। एक ऐसा ही टिकट १९०४ में बिका था। उस पर इंग्लैंड के सम्राट् एडवर्ड III का चेहरा अंकित था। भूरे-गुलाबी रंग का यह टिकट ५६,००० अमरीकी डॉलर में बिका। २० वीं शताब्दी में एक ब्रिटिश टिकट के लिए यह जो कीमत मिली, इतनी कीमत पहले किसी टिकट के लिए नहीं मिली। इसे स्विटज़रलैंड के टिकट इकट्ठे करनेवाले एक व्यक्ति ने खरीदा था।

## स्वेज़ नहर

स्वेज़ नहर भूमध्य सागर और लाल सागर को जोड़ती है। इसकी गहराई इस समय १८ मीटर है। लेकिन इसे अब २२ मीटर तक गहरा किया जा रहा है ताकि इसमें से ज्यादा जहाज़ गुज़र सकें। इससे इन जहाजों को अफ्रीका का चक्कर लगाकर नहीं जाना पड़ेगा और १०-१४ दिनों के सफर की बचत भी होगी। "आधुनिकीकरण" का यह कार्यक्रम पूरा होने को है। संसार के ९० प्रतिशत यात्री-जहाजों को इससे लाभ पहुंचेगा।

## अधिक समय तक चलने वाला बल्ब

कैलिफोर्निया की एक कंपनी ने कई वर्षों के अनुसंधान के बाद एक ऐसा बल्ब तैयार किया है जो २०,००० घंटों तक जलता रहेगा। इस बल्ब को "इलैक्ट्रोनिक लाइट" या "ई लैंप" भी कहते हैं। हर रोज़ तीन घंटे तक इसे इस्तेमाल किया जायेगा तो इसके १८ वर्षों तक चलते रहने की उम्मीद है।
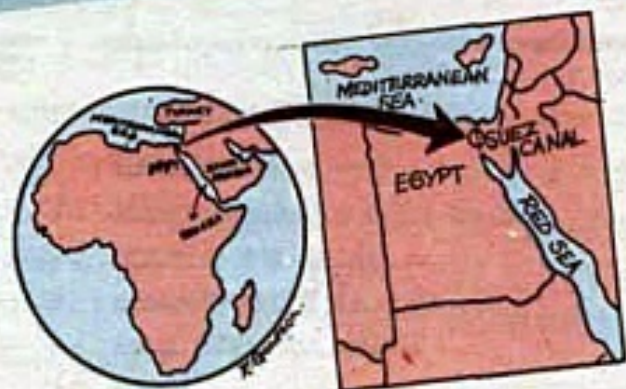
# ज़मींदार की उदारता

रतनपुर नाम के गांव में सुदर्शन नाम के एक युवक की अध्यापक के नाते नियुक्ति हुई । गांव में वह किसी को जानता नहीं था, न ही उसे गांव के बारे में कोई जानकारी थी । इसलिए वह पूछते-पूछते सीधा वहां के ज़मींदार के यहां जा पहुंचा और उसे अपना परिचय दिया । ज़मींदार ने उसके लिए रहने की व्यवस्था कर दी ।

सुदर्शन को ज़मींदार अच्छा लगा । वह अल्पभाषी और गंभीर प्रकृति का था ।

सुदर्शन को उस गांव में आये अभी एक ही सप्ताह हुआ था । इतने में गणेश चतुर्थी का त्योहार आ गया । त्योहार के पहले दिन आकाश में काले-काले बादल घुमड़ आये और वे जमकर बरसे । फिर बारिश तो रुक गयी, लेकिन गांव में हर जगह पानी ही पानी और कीचड़ ही कीचड जमा हो गया । पर त्योहार का दिन था, इसलिए गलियों और बाजारों में काफी चहल-पहल थी ।

बारिश के कारण ठंड भी उतर आयी थी जिससे इधर-उधर बैठकर गणेश की प्रतिमाएं और फल-फूल बेचने वाले ठिठुरने लगे । इससे उनका व्यापार भी मंदा पड़ गया था । इसलिए वे बार-बार बारिश को कोसते ।

गणेश जी की पूजा के लिए सुदर्शन भी कुछ सामान खरीदने बाजार में आया । वहां हर उम्र के लोग बैठे पूजा-सामग्री बेच रहे थी । उनमें बच्चे भी थे और बूढ़े भी । एक जगह उसे जमींदार भी दिखाई दे गया । वह अपना छाता लिये हुए था और फल-फूल बेचने वालों से भाव-ताव कर रहा था । और तो और, वह उनका भाव तोड़ेन पर उतारू था । सुदर्शन को यह देखकर बड़ी हैरानी हुई । वह समझ नहीं पा रहा था

सुवर्णा दीक्षित

कि ज़मींदार इन लोगों से इतने सस्ते में माल क्यों उठाना चाह रहा है!

ज़मींदार ने पहले एक लड़के से कुछ सौदा तय किया । फिर वह दूसरे बेचने वालों से कुछ और सौदा तय करने लगा । सुदर्शन का ध्यान बराबर उधर ही लगा रहा ।

खैर, ज़मींदार ने औने-पौने दामों पर वहां का लगभग सारा माल खरीद लिया और अपने आदमियों से उसे उठवा कर वहां से चल दिया ।

सुदर्शन फिर असमंजस में था । वह समझ नहीं पा रहा था कि ज़मींदार इतने सब फल-फूल और दूसरे सामान का क्या करेगा! क्या वह इसे यहां से ले जाकर कहीं और बेचेगा और उससे लाभ कमायेगा?

उसी समय सुदर्शन को वहां अपना एक साथी-अध्यापक दिखाई दिया । वह भी वहां पूजा की सामग्री लेने आया था । सुदर्शन से रहा नहीं गया । उसने वहां जो कुछ देखा था, उसे कह सुनाया और बोला, "लगता है, ज़मींदार से डरकर इन ग़रीब लोगों ने अपना माल सस्ते में लुटा दिया है । ग़रीब लोगों से ऐसा व्यवहार करने वाले इस ज़मींदार को हम क्या कहें! इधर बेचारे ये लोग मारे ठंड के कांप रहे हैं और उधर ज़मींदार ने इनके पेट पर लात मार दी है । लगता है इंसानियत अब इस धरती से उठ चुकी है । यह सब मैं इसलिए कह रहा हूं कि इसे मैंने अपनी आंखों से देखा है ।"

सुदर्शन की बात सुनकर उसका साथी-अध्यापक परेशान हो उठा । वह खीझकर बोला, "ज़मींदार के लिए ऐसे शब्द इस्तेमाल करना ठीक नहीं । तुम शायद नहीं जानते कि वह हमारे लिए भगवान है ।"

"क्या कहा, भगवान! क्या भगवान ऐसा होता है?" सुदर्शन अपने साथी-अध्यापक से अवहेलना के स्वर में बोला ।

साथी-अध्यापक ने विवाद में पड़ना नहीं चाहा । उसने सुदर्शन से बस इतना ही कहा, "चलो, हम ज़मींदार के घर चलते हैं । असलियत अपने आप सामने आ जायेगी ।" और इतना कहकर वह ज़मींदार के घर की ओर बढ़ने लगा । उसके पीछे-पीछे सुदर्शन भी चला आया ।

जब वे ज़मींदार के यहां पहुंचे तो उन्होंने देखा कि ज़मींदार वह सारा सामान एक ऊंचे चबूतरे पर करीने से रखवा रहा है । उसने सुदर्शन और उसके साथ आये अध्यापक को देखकर कहा, "ओह । आप लोग आये हैं । धन्य है यह दिन! पर आप लोग तो बिल्कुल भीगे हुए हैं ।" फिर उसने अपने एक नौकर से कहा कि वह दोनों अध्यापकों के लिए नये वस्त्र लाये । नये वस्त्र आने पर उसने उन्हें उनकी ओर बढाते हुए कहा, "पहले अपना शरीर ठीक से पोंछ लो और फिर ये नये वस्त्र पहन लो ।"

ज़मींदार की बात सुनकर सुदर्शन हैरान रह गया । उसने अपने साथी-अध्यापक के साथ दूसरे कमरे में जाकर अपने कपड़े बदल लिये । जब वे दोनों साथी ज़मींदार के सामने उपस्थित हुए तो ज़मींदार ने उन्हें गरम-गरम दूध पीने को दिया ।

सुदर्शन की हैरानी अब और बढ़ गयी थी । उसने ज़मींदार से पूछ ही लिया, "महोदय, यदि आप बुरा न मानें तो मैं अपना एक छोटा-सा संदेह दूर करना चाहता हूं ।"

"पूछो-पूछो, बुरा मानने की कौन-सी बात है! मुझे संदेह दूर करके खुशी ही होगी," ज़मींदार ने उत्तर दिया ।

सुदर्शन ने बिना संकोच किये अपनी बात ज़मींदार के सामने रखा दी और बोला, "आज एक तरफ तो वह ज़मींदार देखा जो ग़रीब फल-फूल बेचने वालों के साथ ऐसा मोल-भाव कर रहा था जिसे देखकर मन उद्विग्न हो उठा और दूसरी तरफ वह ज़मींदार देख रहे हैं जिसकी उदारता मन को सहज ही छू लेती है । यही मेरा संदेह है । आप कृपया इस पर कुछ प्रकाश डालें ।"

सुदर्शन की बात सुनकर ज़मींदार हंस दिया और कहने लगा, "आशा है आप इस बात में यकीन रखते हैं कि एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के कष्टों का निवारण करे ।"

"आप क्या कह रहे हैं! क्या आपने उनके कष्टों का निवारण किया है?" सुदर्शन ने परेशान होते हुए कहा ।

"तो आप क्या समझते हैं? ऐसे मौसम में वे लोग इतना कष्ट झेलकर अपना सामान बेचने वहां लाये हैं । पर कौन खरीदेगा उसे? बारिश के कारण वह यों ही बरबाद हो

जायेगा। इसीलिए मैंने उनका ज़्यादा से ज़्यादा सामान खरीद लिया। अब मैंने इसे यहां चबूतरे पर रखवाया है। शीघ्र ही मैं इसे अड़ोस-पड़ोस और अपने आदमियों में बंटवा दूंगा," ज़मींदार ने कहा।

"ठीक है, इससे यह तो स्पष्ट हो गया कि आप एक उदार व्यक्ति हैं। पर आपने तो छोटे से छोटे बच्चों से भी सामान खरीदते समय खूब भाव-ताव किया। इसकी क्या ज़रूरत थी? आप यों ही उन्हें कुछ रकम दे सकते थे। मदद के लिए यह काफी होता।" सुदर्शन ने फिर प्रश्न किया।

इस पर ज़मींदार ने अपना सर हिलाया और कहने लगा, "मैं इस तरह की उदारता में विश्वास नहीं रखता। यदि मैं ऐसे ही रकम बांटने लगूं तो ये बच्चे बिगड़ जायेंगे। आप इस गांव में अभी नये हैं। इसलिए मैं चाहता हूं कि आपको सब कुछ विस्तार से बता दूं। गणेश-चतुर्थी के अवसर पर इस गांव में हर वर्ष थोड़ी-बहुत बारिश होती ही है और ये फल-फूल बेचने वाले जानते हैं कि यदि बारिश की वजह से उनकी बिक्री ठीक से न हुई तो कम-से-कम गांव का ज़मींदार तो उनका काफी माल खरीद ही लेगा। इसीलिए जब बारिश होती है और इनका सामान खरीदने वाले ज़्यादा लोग नहीं रहते तो मैं ही भाव-ताव करने का ढोंग रचकर इनका काफी माल खरीद लेता हूं। यदि मैं ऐसा न करके इन्हें मुफ्त में पैसा देने लगूं तो ये सब आलसी बन जायेंगे। और किसी को आलसी बनाने से बढ़कर और कोई पाप नहीं होता। आप दोनों अध्यापक हैं। आशा है आप मेरी बात समझ गये होंगे।"

ज़मींदार की बात सुनकर सुदर्शन की जैसे कि आंखें खुल गयीं। अब उसे ज़मींदार के व्यवहार की गुत्थी समझ में आ गयी थी। उसने बड़ी विनम्रता से अपने दोनों हाथ जोड़े और ज़मींदार के सामने झुक गया, जैसे कि वह उसकी उदारता की खुले मन से दाद दे रहा हो।

एवज़ में ज़मींदार ने बड़े स्नेह से सुदर्शन की पीठ थपथपा दी।
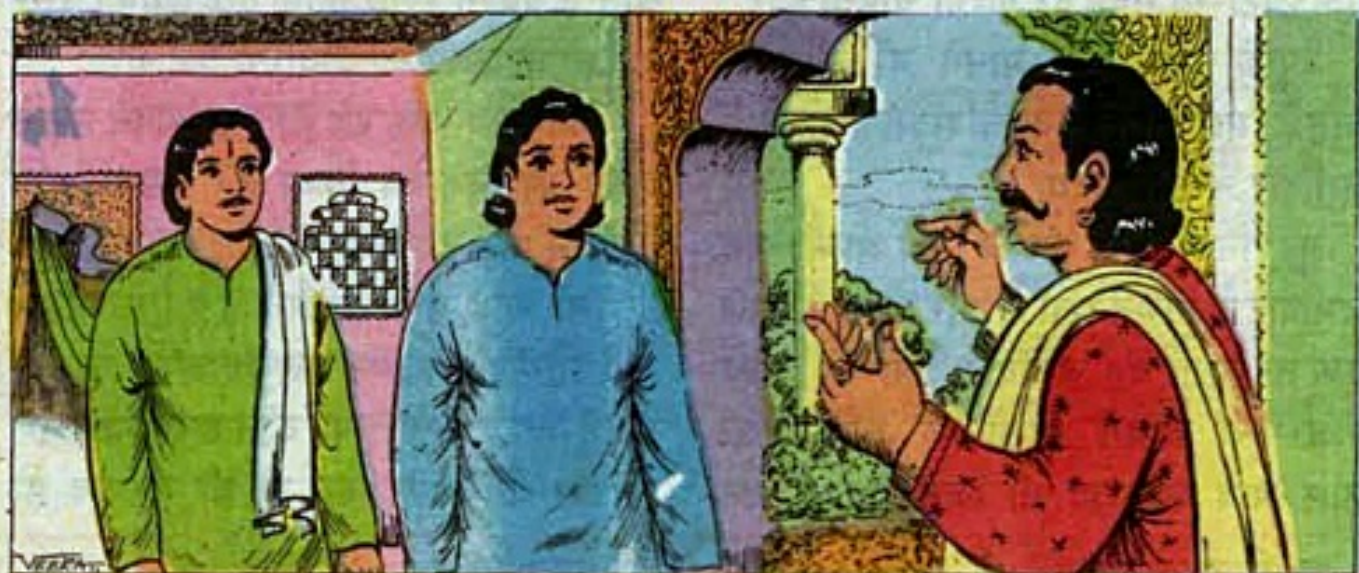
# लायक दामाद

रहीम नाम के रईस के एक ही बेटी थी। उसका नाम रज़िया था। वह काफी सुंदर थी। रहीम की जायदाद भी इतनी थी कि यदि उसे पुश्त-दर-पुश्त बैठ कर खाया जाता तो भी वह ख़त्म होने वाली न थी।

रहीम एक खुदापरस्त इंसान था। वह खुदा की इबादत में हमेशा डूबा रहता। उसका मानना था कि उसके पास जो कुछ भी है, वह सब खुदा का दिया हुआ है।

रज़िया जब बड़ी हुई, तो उससे निकाह करने के लिए बड़े से बड़े घराने के नौजवान आपस में होड़ लगाने लगे। मगर रहीम को उनमें से एक भी रिश्ता पसंद नहीं आया, क्योंकि निकाह की पेशकश करने वालों में कोई भी ऐसा नौजवान नहीं था जो खुदा-परस्त हो।

एक रोज़ रहीम की बीवी, सुलताना, ने अपने शौहर से कहा, "देखिए, हमारी बेटी के लिए इस वक्त अच्छे से अच्छे रिश्ते आ रहे हैं। रिश्ता लेकर आने वालों में कुछ तो बहुत बड़े रईस हैं। पर, न जाने क्यों, आपको एक भी रिश्ता पसंद नहीं आ रहा। अगर ऐसे ही चलता रहा तो मुझे शक है हमारी बेटी की शादी कभी नहीं हो पायेगी।"

उस वक्त सुलताना का गला ग़म से रुंधा हुआ था, और रहीम ने कहा, "अरी पगली, हमारे पास अल्लाह की दी हुई दौलत और शोहरत की कोई कमी नहीं। इसलिए यह ज़रूरी नहीं कि हमारी बेटी से निकाह करनेवाला शख्स कोई अमीर ही हो। वह ग़रीब होगा, तब भी मुझे मंजूर है। पर वह नेक हो, और खुदा का शुक्र मानने वाला हो। ऐसे नौजवान की तलाश में हूं। अल्लाह ने चाहा तो बहुत जल्द रज़िया अपने

अरबी लोककथा

शौहर के घर में होगी । तुम किसी तरह का फिक्र मत करो ।"

उसी रात नासिर नाम का एक चोर चोरी करने के इरादे से रहीम के घर में घुस आया । इत्तफ़ाक से उस वक्त मियां-बीवी के बीच अपनी बेटी के रिश्ते के बारे में बात चल रही थी । नासिर उनकी बातचीत सुनता रहा । उसके अंदर कोई ख्याल कौंधा ।

अगली सुबह जब रहीम नमाज़ अदा करने मस्जिद में पहुंचा तो उसे वहां एक नौजवान दिखाई दिया । वह बड़े जोशोखरोश के साथ नमाज़ पढ़ रहा था ।

खैर, अब यह सिलसिला हर रोज़ का बन गया । रहीम जिस वक्त मस्जिद में पहुंचता, नासिर उससे पहले ही वहां पहुंचा होता ।

एक रोज़ रहीम ने उससे पूछ ही लिया, "बेटा, तुम कौन हो? पिछले दस दिनों से मैं तुम्हें बराबर यहां मस्जिद में देख रहा हूं । लगता है तुम यहीं सोते हो ।"

जवाब में नासिर ने कहा, "मैं एक बदकिस्मत इंसान हूं । न मेरे मां-बाप हैं, और न मेरा कोई घर-बार है । जहां मैं रुक जाता हूं, बस, उसे ही मेरा ठौर-ठिकाना समझिए । हां, अल्लाह का नाम लेता हूं और अपने दिन गुज़ार रहा हूं ।"

"तब तो तुम्हें खाना भी मयस्सर नहीं होता होगा?" रहीम ने सवाल किया ।

"अल्लाह का जब नाम लेता हूं तो मुझे भूख-प्यास का पता ही नहीं चलता । देर रात को जब कभी मुझे भूख लगती है तो अल्लाह कहीं-न-कहीं से मेरे लिए रूखी-सूखी रोटी का इंतज़ाम कर देता है ।" नासिर ने कहा ।

रहीम को लगा कि असली इबादत तो यही है । फौरन उसके मन में एक ख्याल आया, 'वाह! इतनी कम उम्र में ऐसी इबादत! वैसे भी यह नौजवान खूबसूरत है, नेकदिल है । बस, मेरी तलाश पूरी हो गयी । मेरी बेटी के लिए यही रिश्ता ठीक रहेगा । इसी के साथ मेरी रज़िया का विवाह होगा ।'

उस दिन से रहीम रोज़ नासिर के लिए बढ़िया से बढ़िया खाना भिजवाने लगा ।

इसी तरह चालीस दिन बीत गये । तब तक नासिर सचमुच खुदा का बंदा बन चुका था । जो खाना रहीम उसे भेजता, उसे वह

खुदा का शुक्र मानकर खा लेता और फिर उसी की इबादत में डूब जाता ।

वहां पर कुछ बुजुर्ग भी आते थे । वह अब अपना ज़्यादा वक्त उन्हीं की सोहबत में बिताता । इससे उसमें वाकई ज़बरदस्त तबदीली आ गयी ।

एक दिन रहीम ने नासिर से कहा, "जब कभी मैं तुम्हें देखता हूं, मेरा दिल खुशी से भर जाता है । तुम मेरी बेटी से निकाह कर लो । मुझे बहुत खुशी होगी ।"

यह सुनते ही नासिर फौरन रहीम के पैरों पर गिर पड़ा और रोते हुए कहने लगा, "मुझे माफ कर दीजिए, हुज़ूर! मैं एक चोर हूं । एक दिन मैं चोरी करने के इरादे से आपके घर में घुस गया था । तब मैंने आप दोनों मियां-बीवी के बीच आपकी बेटी के बारे में बातचीत होती सुनी । मेरे मन मुं आपकी बेटी से निकाह करने की नामुराद उम्मीद पैदा हुई । आप से मैं क्या कहूं! आपका ध्यान अपनी तरफ़ खींचने के लिए ही मैंने यह इबादत का ढोंग रचा था । लेकिन इन चालीस दिनों के दौरान मेरे अंदर कुछ ऐसी तबदीली आयी है कि मैं अपने पहले किये हुए कामों पर पछता रहा हूं । अब मैं कभी चोरी नहीं करूंगा । अब मैं मेहनत से जीना चाहता हूं । मैं आपकी बेटी के लिए किसी तरह भी काबिल नहीं हूं । आप किसी और से उसका निकाह कर दीजिए । मैंने आपको धोखा दिया । इसके लिए आप मुझे जो भी सज़ा देंगे, मुझे मंजूर होगी ।"

नासिर की बात सुनकर रहीम पहले तो हैरान हुआ, फिर संभल कर बोला, "अरे पगले, न समझते-बूझते हुए तुमने जो गलतियां कीं, उनका पाप तुम्हारे इस पछतावे से धुल गया है । अब तो तुम एक साफ, धुले मोती की तरह हो । अल्लाह ने तुम्हें मेरी बेटी केलिए ही भेजा था । अब तुम मेरे दामाद हो!"

आखिर नासिर और रज़िया का निकाह हो गया । नासिर अब अपने ससुर का लायक दामाद बन गया था ।

# कुशल व्यापारी

विशालपुर के चौराहे पर प्रमोद नाम के एक व्यक्ति ने जूतों की एक दुकान खोली। चौराहा होने के कारण ग्राहक तो बहुत आते थे। लेकिन जूते कोई नहीं खरीदता था, क्योंकि उन्हें जूते का कोई भी जोड़ा पसंद नहीं आता था। इस बात को लेकर प्रमोद प्रायः चिंतित रहता और यही सोचता कि कैसे इस कारोबार को जमाया जाये।

एक दिन उसकी दुकान पर एक ग्राहक आया। उसने एक जोड़ा चप्पल पसंद भी कर लिया, लेकिन जब वह उन्हें पहनकर देखने लगा तो उसे वे चप्पल ज़रा तंग लगे। इसी बात को लेकर वह वहां से उठने को हुआ।

लेकिन प्रमोद ने उसे रोका और कहा, "आप इन चप्पलों के बारे में पूरी जानकारी नहीं रखते। ये नये हैं। इसीलिए कुछ तंग-तंग लग रहे हैं। लेकिन दो-एक दिन जब आप इन्हें पहनेंगे तो ये बिलकुल ठीक हो जायेंगे। और अगर आपने अभी से सही माप के ले लिये तो बाद में ये ढीले पड़ जायेंगे।"

प्रमोद की बात उस ग्राहक को जंच गयी। उसने तुरंत वह जोड़ा खरीद लिया।

दूसरे दिन उसकी दुकान पर एक और ग्राहक आया। उसे अपने बेटे के लिए एक जोड़ा चप्पल चाहिए था। उसने एक जोड़ा पसंद भी किया, लेकिन जब उन्हें पहन कर देखा गया तो वे काफी ढीले निकले। तब प्रमोद उस ग्राहक से बोला, "देखिए, आप का बेटा अभी बहुत छोटा है। इसके पांव अभी छोटे हैं। ये बढ़ेंगे। इसलिए इसके लिए ढीले चप्पल लेना ही बेहतर होगा। अभी से ठीक माप के ले लिये तो चंद ही दिनों में वे तंग हो जायेंगे।"

ग्राहक को लगा कि यह दुकानदार बहुत समझदार है-उसने तो यह बात सोची ही नहीं थी! इसलिए उससे बोला, "आप बिलकुल ठीक फरमा रहे हैं।" और इसके साथ ही उसने चप्पलों के दाम चुकता कर दिये।

प्रमोद अब अच्छी तरह समझ गया था कि कोरी ईमानदारी से दुकानदारी या कोई कारोबार नहीं चल सकता, इसके लिए व्यवहार-कुशल होना बहुत ज़रूरी है।

—वीणा चौधरी

अब वानर हज़ारों की संख्या में कुंभकर्ण पर टूट पड़े थे । उन्होंने पर्वत के समान उस राक्षस के शरीर को अपने दांतों से काटा, नाखूनों से नोचा और उस पर घूंसे भी चलाये । लेकिन कुंभकर्ण पर इसका रत्ती-भर भी असर नहीं हुआ । वह पूर्ववत् वानर सेना को नष्ट किये जा रहा था, जिससे यह स्पष्ट हो गया कि उसे रोक पाना वानरों के बस का नहीं । अंगद, और उसके बाद सुग्रीव ने भी, अपनी-अपनी तरह से कुंभकर्ण पर वार किये, लेकिन वे सब नाकाम रहे । कुंभकर्ण पर तो कहीं खरोंच भी नहीं आ रही थी ।

अब कुंभकर्ण ने सुग्रीव पर अपना शूल फेंका, पर हनुमान ने उसे बीच में ही लपक लिया और उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिये । यह देखकर वानर बहुत खुश हुए, और उसी खुशी में वे सिंहनाद करने लगे । तब कुंभकर्ण ने एक पर्वत का शिखर सुग्रीव पर फेंका जिससे सुग्रीव मूर्छित हो गया । अब खुशी से सिंहनाद करने की बारी राक्षसों की थी । कुंभकर्ण ने सुग्रीव की मूर्च्छा का लाभ उठाया और उसे लेकर वह लंका की ओर चल पड़ा । उसने सोचा कि इस तरह सुग्रीव का अपहरण हो जाने से राम-लक्ष्मण सहित समूची वानर सेना उसके वश में आ जायेगी ।

लेकिन हनुमान आश्वस्त था । वह जानता था कि जैसे ही सुग्रीव की मूर्च्छा टूटी, वह स्थिति संभाल लेगा और अपनी रक्षा स्वयं करेगा । इसलिए वह अविचलित वहीं युद्धभूमि पर खड़ा रहा और वानर-वीरों का धैर्य बंधाता रहा ।

## २७. राम-लक्ष्मण की मूर्च्छा

जैसा हनुमान ने सोचा था, वैसा ही हुआ । जिस क्षण सुग्रीव की मूर्च्छा टूटी, उसने देखा कि वह कुंभकर्ण की भुजा पर टिका है और कुंभकर्ण उसे लिये लंका में अब तक प्रवेश कर चुका है ।

उसने तुरंत कुंभकर्ण के नाक-कान काट लिये । इससे वहां खून का फव्वारा फूट पड़ा । कुंभकर्ण ने मारे पीड़ा के सुग्रीव को वहीं भूमि पर पटक दिया और लगा उसे अपने पैरों से रौंदने । लेकिन सुग्रीव किसी न किसी तरह उसके चंगुल से बच निकला और एकदम आकाश में उड़कर राम के पास जा पहुंचा । सुग्रीव को इस तरह बचकर निकलते देख कुंभकर्ण हैरान रह गया । वह वापस युद्धभूमि में चला आया और वानरों का भक्षण करने लगा । अब लक्ष्मण से रहा नहीं गया । वह आगे बढ़ा और उसने कुंभकर्ण पर बाण पर बाण छोड़ने शुरू कर दिये । लेकिन कुंभकर्ण ने लक्ष्मण की अवहेलना की और वह राम से युद्ध करने के लिए आगे बढ़ा ।

कुंभकर्ण को अपनी ओर बढ़ते देख राम ने कहा, "हे कुंभकर्ण, तुमने इंद्र को पराजित किया होगा । लेकिन मैं इंद्र नहीं हूं, मैं राम हूं और तुम्हारा एक क्षण में ही वध कर सकता हूं ।"

"हे राम, मैं भी वालि या मारीच नहीं हूं, कुंभकर्ण हूं । तुम अपना पराक्रम दिखाओ । जब तुम थक जाओगे तो मैं तुम्हें खा जाऊंगा ।" कुंभकर्ण ने राम की चुनौती स्वीकार करते हुए कहा ।

जिन बाणों का राम ने साल वृक्ष गिराने और वालि का वध करने के लिए इस्तेमाल किया था, वही बाण उन्होंने कुंभकर्ण पर छोड़े, लेकिन उनसे कुंभकर्ण का कुछ भी नहीं बिगड़ा । तब राम ने उस पर वायव्यास्त्र का प्रयोग किया । इससे गदा समेत कुंभकर्ण का हाथ कट कर नीचे आ गिरा ।

अपना एक हाथ कटा देख कुंभकर्ण ज़ोर से चीखा । उसने अपने दूसरे हाथ से एक विशाल वृक्ष उखाड़ा और उसे राम पर फेंकने को हुआ । इतने में राम ने कुंभकर्ण पर ऐंद्रास्त्र चला दिया जिससे उसका दूसरा बाहू भी कट कर नीचे आ गिरा । लेकिन कुंभकर्ण का आगे बढ़ना अभी रुका नहीं

था। इस पर राम ने कुंभकर्ण के पांव भी काट डाले। अंत में उन्होंने उसका सर भी उड़ा दिया।

कुंभकर्ण की मृत्यु पर राक्षस ढारें मार-मार कर रोने लगे। वे राम से बुरी तरह से भयभीत थे। वे बार-बार सिहर उठते थे। उधर वानर राम के चारों ओर बैठे उनकी पूजा कर रहे थे।

राक्षसों ने जब रावण को खबर दी कि कुंभकर्ण राम के हाथों मारा जा चुका है तो रावण उसी क्षण मूर्छित हो गया। अपने पिता को इस तरह मूर्छित हुआ देख रावण के पुत्र देवांतक, नरांतक, त्रिशर और अतिकाय भी विलाप करने लगे। उधर महोदर और महापाश्‍र्व भी रावण के पुत्रों के समान विलाप करने लगे। रावण की जब मूर्च्छा टूटी तो वह अन्य राक्षसों की तरह भयभीत था। उसे लगा कि लंका नगरी अब शीघ्र ही वानरों के कब्जे में चली जायोगी और इससे उसका राजभोग समाप्त हो जायेगा। साथ ही उसकी तमाम आशाएं भी धरी की धरी रह जायेंगी। उसे अब सीता को पाने की आशा भी समाप्त होती दिखने लगी; वह अब बदले की भावना से जल रहा था। छोटे भाई का बदला तो चुकाना ही होगा। यीद वह राम को मार न पाया तो उसे स्वयं को अपनी जान दे देनी होगी। अब उसे इस बात का पश्चात्ताप भी हो रहा था कि क्यों उसने विभीषण की बात नहीं मानी। क्या यह बहुत बड़ी भूल नहीं?

रावण को असीम दुःख में डूबा देखकर त्रिशर ने कहा, "आप क्यों अधीर हो रहे हैं? आप तो तीनों लोकों को पराजित कर सकते हैं। अब आप मुझे युद्धभूमि में जाने की आज्ञा दें। राम का अंत मैं करूंगा।"

त्रिशर की बात सुनकर देवांतक, नरांतक, महोदर और महापाश्‍र्व भी उसके साथ चलने के लिए तैयार हो गये। उनके आत्मविश्‍वास से रावण बहुत खुश हुआ। उसने तुरंत उन्हें युद्धभूमि में उतरने की अनुमति दे दी।

एक बार फिर अब राक्षसों और वानरों के बीच घमासान युद्ध शुरू हो गया था। नरांतक वानरों के बीच काफी उत्पात मचाने लगा था। इस पर सुग्रीव ने अंगद से कहा

कि वह उसकी इहलीला समाप्त कर दे। अंगद उसी क्षण आगे बढ़ा, उसने नरांतक को ललकारा और थोड़ी ही देर में उसे मौत के घाट उतारने में सफल हो गया।

यह देखकर त्रिशर, महोदर और देवांतक एक साथ अंगद पर टूट पड़े। अंगद बड़े साहस के साथ उन तीनों राक्षसों का मुकाबला करता रहा। जब हनुमान ने अंगद को इस तरह घिरा पाया तो उसने तुरंत देवांतक पर अपनी मुष्टि से वार किया और उसी क्षण उसे इस धरती से उठा दिया। नील ने आगे बढ़कर महोदर को पार लगा दिया।

महापार्श्व के साथ ऋषभ ने जमकर युद्ध किया और अंत में उसका वध कर दिया। इस प्रकार जब इन सभी राक्षस योद्धाओं का अंत हो गया तो राक्षस सेना अपने हथियार वहीं छोड़कर भाग खड़ी हुई।

इतने पराक्रमी राक्षसों के मारे जाने की खबर सुनकर अब अतिकाय रणभूमि की ओर बढ़ा। वह एक छोटे पर्वत के समान दिख रहा था। उसे आगे बढ़ता देख राम ने विभीषण से पूछा, "यह राक्षस वीर कौन है?"

"यह धान्यमालिनी से प्राप्त रावण का एक और पुत्र है। इसका नाम अतिकाय है। यह रावण के समान ही प्रतापी है। इसने ब्रह्मा को प्रसन्न करके यह वरदान पाया है कि इसे देवता या राक्षसों में से कोई नहीं मार सकता। इसने जो कवच पहन रखा है, और जिस रथ पर यह चढ़कर यहां चला आ रहा है, ये सब इसे ब्रह्मा से प्राप्त हुए हैं। इन्हीं के कारण इसने कई बार देवताओं और दानवों को हराया है और राक्षसों की रक्षा की है। इसे यदि जल्दी से जल्दी खत्म न किया गया तो यह वानर सेना को भारी क्षति पहुंचायेगा।" विभीषण ने राम को सलाह देते हुए कहा।

इस बीच आगे बढ़ते अतिकाय को कुमुद, द्विविध, मैंद, नील और शरभ नाम के वानर वीरों ने रोकने की कोशिश की, लेकिन उसका वे बाल भी बांका न कर सके, बल्कि अतिकाय के बाणों से वे बुरी तरह घायल हो गये।

वानर सेना के चुने हुए वीरों को घायल करके और बाकी वानर योद्धाओं की परवाह किये बना अतिकाय सीधा राम के सामने आ खड़ा हुआ, और उन्हें ललकारते हुए कहने लगा, "मैं उनसे नहीं लड़ता जो कायरतावश रणभूमि से भाग खड़े होते हैं। तुम में ऐसा कौन है जो मुझसे युद्ध करना चाहता है?"

अतिकाय की इस डींग से लक्ष्मण गुस्से में आ गया। वह तनकर वहां आ खड़ा हुआ और साथ ही उसने अपने धनुष की टंकार की। इस पर अतिकाय बोला, "हे लक्ष्मण, तुम अभी छोटे हो। तुम्हारे पास अभी अनुभव की कमी है। तुम्हारा-मेरा कोई मुकाबला नहीं। क्यों बेकार में तुम अपनी जान गंवाना चाहते हो? मेरी बात मानो और यहां से जाओ।"

"अगर तुम अपनी बहादुरी ही दिखाना चाहते हो तो ये डींग मारना बंद करो और अपना पराक्रम दिखाओ। अपने मुंह से आत्मश्लाघ अच्छी नहीं लगती।" लक्ष्मण ने उसे उसी की शैली में उत्तर दिया।

परिणामस्वरूप अतिकाय और लक्ष्मण, दोनों के बीच, युद्ध शुरू हो गया। लक्ष्मण ने जब बाण पर बाण छोड़े तो अतिकाय उसकी प्रशंसा किये बिना न रह सका। वह अब उत्साह से भर गया था और लक्ष्मण के साथ जमकर युद्ध करने लगा था। दोनों एक दूसरे पर दिव्यास्त्रों से प्रहार कर रहे

थे। अतिकाय के बाणों से लक्ष्मण परेशान हो चुका था, लेकिन लक्ष्मण के बाणों का अतिकाय पर कोई असर नहीं हो रहा था। अतिकाय का कवच अभेद्य था। लक्ष्मण के बाण उससे टकरा कर वापस हो रहे थे। विवश होकर लक्ष्मण को अब ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करना पड़ा। अतिकाय ने उसे रोकना चाहा, पर वह असफल रहा। ब्रह्मास्त्र ने अतिकाय का सर धड़ से उड़ा दिया।

अतिकाय की मृत्यु पर राक्षसों के दुःख का पारावार न रहा। रावण को जब इसकी खबर मिली तो वह चौंक उठा, क्योंकि उसका एक से एक बड़ा योद्धा राम-लक्ष्मण के हाथों अपनी जान गंवा रहा था। उसे अब इस

बात का रंज था कि उसने वानर सेना की शक्ति का ठीक से अनुमान नहीं लगाया । इसे वह एक तरह से अपना अपराध समझने लगा था ।

अपने पिता को इस प्रकार दुःख में डूबा देख इंद्रजित से रहा नहीं गया । वह बोला "जब तक मैं जीवित हूं, आपको मैं दुःखी नहीं देख सकता । मेरे बाणों में ऐसी शक्ति है जिनसे कोई नहीं बच सकता । इस राम-लक्ष्मण को तो मैं यों ही समाप्त कर दूंगा । मैं तुरंत रणभूमि में उतर रहा हूं ।"

अपने पिता की अनुमति पाकर और श्रेष्ठ अश्वों वाले अपने रथ पर सवार होकर इंद्रजित रणभूमि की ओर बढ़ चला । और जैसे ही उसका रथ आगे बढ़ा, अनेक राक्षस योद्धा तरह-तरह के हथियारों से लैस होकर उसके पीछे-पीछे हो लिये ।

रणभूमि में पहुंचकर इंद्रजित ने दिव्य रथ प्राप्त करने के लिए यज्ञ करने का निश्चय किया । उसने अपने चारों ओर राक्षसों को पहरे पर नियुक्त कर दिया और फिर मंत्रों का उच्चारण करते हुए अग्नि को आहुति देने लगा । वह जब आहुति दे रहा था तो अग्नि की बड़ी-बड़ी लपटें बिना धुआं किये ऊपर उठ रही थीं । इसके बाद उसने ब्रह्मास्त्र का आह्वान किया और इसके साथ धनुष, रथ और आयुधों को मंत्रसिद्ध किया ।

अब उसका यज्ञ पूरा हो चुका था । और जैसे ही यह यज्ञ पूरा हुआ, वह अपने दिव्य रथ, सारथी और आयुधों के साथ आकाश में अंतर्द्धान हो गया । इधर राक्षस सेना वानर सेना के साथ भिड़ गयी थी, और इंद्रजित बराबर उन्हें अपने आवेग-भरे शब्दों से प्रोत्साहित कर रहा था । फिर वह स्वयं भी रणभूमि पर उतर आया । उसका एक एक वार पांच-छः वानर वीरों को एक साथ समाप्त कर रहा था । वह बहुत ही निर्ममता से वानरों का वध कर रहा था । गंधमादन, नल, मैंद, गज, सुग्रीव, ऋषभ, अंगद तथा द्विविध जैसे महान योद्धा भी उसकी चपेट में आ चुके थे । हां, स्वयं वह अदृश्य ही रहता था, जिससे पलटकर उस पर कोई वार नहीं कर पा रहा था ।

इंद्रजित जिन अस्त्रों का प्रयोग कर रहा था, उनमें से कुछ राम और लक्ष्मण को भी आ लगे। तब राम ने लक्ष्मण से कहा, "लक्ष्मण, यह इंद्रजित अदृश्य रहकर युद्ध कर रहा है। इसीलिए हम उसका कुछ भी बिगाड़ नहीं पा रहे। मुझे तो ऐसे लग रहा है जैसे कि हम उसके अस्त्रों से मूर्छित हो गये हों। अगर यही स्थिति बनी रही तो वह लंका में पहुंचकर बड़े गर्व के साथ कहेगा कि उसने हम सब को निरस्त कर दिया है।"

इतने में वाकई राम और लक्ष्मण मूर्छित होकर गिर पड़े और इंद्रजित वाकई सिंहनाद करता हुआ लंका को लौट गया।

हनुमान की समझ में स्थिति आ गयी थी। उसने विभीषण से कहा, "इंद्रजित ने जिस अस्त्र का प्रयोग किया है, वह ब्रह्मास्त्र था। हमें इस बात का पता लगाना चाहिए कि कितने वानर उसके प्रभाव में आ गये हैं और कितनों का अंत हो चुका है।"

रात्रि का समय था। हनुमान और विभीषण अपने हाथों में जलती लकड़ियों को मशाल की तरह लिये युद्धभूमि में इधर-उधर घूमने लगे। एक जगह उन्हें जांबवान दिखाई दिया। उसमें अभी प्राण बाकी थे।

विभीषण ने उससे प्रश्न किया, "आप जीवित तो हैं न?"

जांबवान की दृष्टि पथराई हुई थी। उसने पलटकर किसी तरह विभीषण से प्रश्न किया, "हनुमान तो जीवित है न?"

विभीषण को कुछ विचित्र लगा। उसने कहा, "आपने राम-लक्ष्मण के बारे में न पूछकर हनुमान के बारे में क्यों पूछा है?"

"पुत्र विभीषण! हनुमान यदि जीवित रहे और सारी वानर सेना नष्ट भी हो जाये तो समझो वानर सेना की अधिक क्षति नहीं हुई। लेकिन अगर वह नहीं रहा तो समूची वानर सेना जीवित होते हुए भी मृत-समान ही होगी।" जांबवान ने उत्तर दिया।

वृद्ध जांबवान के इस तरह के उद्गार सुनकर हनुमान आगे आया और उसने

जांबवान के पांव छूकर उसका अभिवादन किया । इस पर जांबवान ने हनुमान से कहा, ''बेटा, हनुमान । अब वानरों की रक्षा तुम्हें करनी होगी । तुम्हारे सिवाय इस काम को और कोई नहीं कर सकता ।'' फिर राम-लक्ष्मण की मूर्च्छा दूर करने के लिए उसने हनुमान को एक उपाय बताया जो इस प्रकार था : ''समुद्र पार करके तुम हिमालय पर जाओ । वहां तुम्हें कांचन और कैलास की दो सबसे ऊंची चोटियां दिखाई देंगी । उन दोनों चोटियों के बीच एक औषधि पर्वत है । उस पर्वत के शिखर पर चार दिव्य औषध हैं । वे औषध निरंतर अपना प्रकाश फेंकते रहते हैं । उनका नाम है विशल्यकरणी, मृतसंजीवनी, सौवर्णकरणी और संधानकरणी । इन चारों औषधियों को लेकर तुम जल्दी से जल्दी यहां वापस आओ । उनके प्रयोग से सभी मृत वानर जीवित हो उठेंगे और स्वास्थ्य लाभ पायेंगे । तुम अविलंब वहां से लौटकर आओ ।''

बिना एक क्षण भी खोये हनुमान एकदम ऊपर उठा और आकाश-मार्ग से होता हुआ वायु की गति से हिमालय की ओर उड़ चला । उसके रास्ते में कई पर्वत, नदियां और जंगल आये, लेकिन वह उन सब को पार कर गया । इस प्रकार बहुत कम समय में ही वह हिमालय पर जा पहुंचा । वह जैसे ही वहां पहुंचा, उसे वहां ऊंचे-ऊंचे पर्वत-शिखर दिखाई दिये । वहां कई मुनि-आश्रम और वाटिकाएं थीं । उसने वहां ब्रह्मकोष, कैलासपर्वत, इंद्र की तपोभूमि, रुद्रबाण मोक्ष स्थल, हयग्रीवस्थल और ब्रह्मकपाल इत्यादि को भी देखा । उसने वह स्थल भी देखा जहां ब्रह्मा ने इंद्र को वज्र दिया था ।

इसके अलावा उसने कुबेर स्थल, ब्रह्मासन, और शिवधनु क्षेत्र भी देखे । फिर उसे कैलास शिखर और कांचन शिखर के बीच औषधि पर्वत भी दिखाई दिया । वाकई, वहां पर औषध की जो झाड़ियां थीं, वे अद्‌भुत प्रकार से चमचमा रही थीं ।

# नींद का इलाज

पुराने ज़माने की बात है । कश्मीर राज्य में वज्रगुप्त नाम का एक सौदागर रहता था । वह लाखों का व्यापार करता था और लाखों ही कमाता था । फिर भी उसमें हमेशा एक प्रकार के अतृप्ति-सी बनी रहती । और यह अतृप्ति दिन-ब-दिन बढ़ती ही जा रही थी जिससे उसकी नींद भी उड़ गयी थी ।

एक बार पड़ोस के नगर में रहने वाला उसका एक मित्र उससे मिलने आया । मित्र का नाम जयानंद था । जयानंद एक साधारण परिवार का व्यक्ति था । उस की कमाई सीमित थी और वह जो कमाता, उसी से सब्र कर लेता, और अपने बाल-बच्चों के साथ दिन बिताता ।

दोनों मित्र जब साथ-साथ बैठे हुए थे तो वज्रगुप्त ने जयानंद को बताया कि उसे नींद नहीं आती, और यह उसके लिए एक बहुत बड़ी समस्या बन गयी है जिसका उसे हल चाहिए ।

जयानंद ने मित्र की बात बड़े ग़ौर से सुनी और फिर धीमे से मुस्कराता हुआ बोला, "मैं जानता हूं तुम्हारी आंखों से नींद क्यों उड़ गयी है । तुम कुछ समय के लिए अपने व्यापार और उसकी समस्याओं के बारे में सोचना बंद कर दो, और वक्त गुज़ारने के लिए कोई ऐसा काम हाथ में लो जिससे तुम्हें माथा-पच्ची न करनी पड़े । बस, नींद अपने आप आ जायेगी । यही तुम्हारी समस्या का हल है ।"

अभी वे आपस में बातचीत कर ही रहे थे कि उन्हें बाहर से भेड़-बकरियों की आवाज़ें सुनाई दीं । साथ ही उन्हें हांकने वाले चरवाहों की आवाजें भी सुनाई दीं ।

जयानंद ने मित्र से पछा, "बाहर यह शोर कैसा है?"

"क्या बताऊं! जयानंद, गांव के

कु. गोमती

बाहर के मैदान में चरने के लिए जाने वाली भेड़ों के रेवड़ यहीं से होकर निकलते हैं। और कोई रास्ता नहीं है। फिर शोर क्यों नहीं होता?" वज्रगुप्त ने उत्तर दिया।

जायानंद कुछ देर तक कुछ सोचता रहा। अचानक उस के मन में कोई विचार कौंधा। इस पर उस के अधरों पर मुस्कराहट हुई। फिर जयानंद अपने मित्र से बोला, "कल से तुम एक काम करो। दिन भर अपने घर के चबूतरे पर बैठकर चरने जाने वाली इन भेड़-बरियों की गिनती किया करो। मैं जानता हूं यह एकदम बेकार का काम है। फिर भी इस से तुम्हें जरूर फायदा होगा। इस तरह बेकार के इस काम में लगे रहने से तुम्हें ज़रूर नींद आयेगी। मैं तुमसे मिलने फिर आऊंगा और देखूंगा कि मेरी सलाह से तुम्हें कितना फायदा हुआ है!" और इन शब्दों के साथ ही जयानंद वहां से चला गया।

दो हफ्ते इसी तरह बीत गये। एक दिन जयानंद अचानक ही वज्रगुप्त के यहां फिर आ निकला और उसने देखा कि वज्रगुप्त काफी थका हुआ है। उसकी आँखें थकावट से काफी लाल हो रही थीं। इस पर जयानंद ने पूछा, "क्यों, वज्रगुप्त। लगता है मेरी सलाह से तुम्हें कोई फायदा नहीं हुआ। क्या तुम्हें अब भी नींद नहीं आती?"

जयानंद की बात सुनकर वज्रगुप्त जरा परेशान हुआ था, क्योंकि उसने जयानंद की सलाह का पालन किया था, फिर भी उसे नींद नहीं आ रही थी। किसी तरह वह मुस्करा उठा।

"नींद! मेरा ऐसा भाग्य कहां! तुम्हारी सलाह के मुताबिक मैं रोज़ इस चबूतरे पर बैठकर भेड़ों की गिनती करता था। एक दिन मुझे संदेह हुआ कि मेरी गिनती गलत है। मैं सीधा उसी मैदान में पहुंचा जहाँ भेड़ें चर रही थीं। मैं वहां तालाब के किनारे खड़ा हो गया और बड़ी सावधानी से फिर से भेड़ों की गिनती करने लगा। एक बार नहीं, कई बार। मुझे आश्चर्य हुआ—हमारे इस नगर में पूरी एक हज़ार भेड़ें हैं।" वज्रगुप्त ने कहा।

"एक हज़ार भेड़ें! इस कद्र ठीक गिनती की तुमने? वक्त काटने के लिए तुमने यह एक बेकार-सा काम अपने हाथ में लिया

था। उसे इतनी लगन और सावधानी से करने की क्या ज़रूरत थी?" जयानंद ने पूछा।

इस पर वज्रगुप्त बोला, "अरे, गिनती तो आखिर गिनती ही होती है न! उसमें गलती बिलकुल नहीं होनी चाहिए। मैं ने इस प्रकार एक साथ एक हज़ार भेड़ें देखीं, इस पर ही मेरे मन में यह विचार आया कि इनसे कम से कम चार हज़ार सेर ऊन की प्राप्ति हो सकती है। वरना मैं यह नहीं जान पाता।"

वज्रगुप्त की बात सुनकर जयानंद हंसे बिना न रह सका। बोला, "मैंने तुम्हें साधारण रूप से भेड़ों की गिनती करने के लिए ही कहा था। मैंने यह नहीं कहा था कि तुम यह हिसाब लगाओ कि तुम्हें इन पर कितना खर्च करना पड़ेगा और इससे तुम्हें कितना लाभ मिलेगा!"

"जयानंद, तुम यह तो जानते ही हो कि यहां बहुत बढ़िया ऊनी कपड़ा बनाने वाले कारीगर हैं। ऊनी कपड़े में तो वे जान डाल ही देते हैं, अगर उन्हें ऊन दी जाये तो वे कम से कम दो हजार गज़ ऊनी कपड़ा तैयार कर सकते हैं। हम एक गज़ कपड़ा दो मोहरों के हिसाब से बेच सकते हैं। और इस तरह----" वज्रगुप्त अपनी बात कहता चला गया।

जयानंद ने उसे टोका, "अब और कुछ कहने की ज़रूरत नहीं। जब तुमने बुनकरों को ऊन देना निश्चित कर ही लिया है तो तुम्हें नींद कैसे आ सकती है? अब तो पहले बुनकरों को ऊन दिया जाना चाहिए, फिर कपड़ा आकार तुम्हारी दुकान में पहुंचना
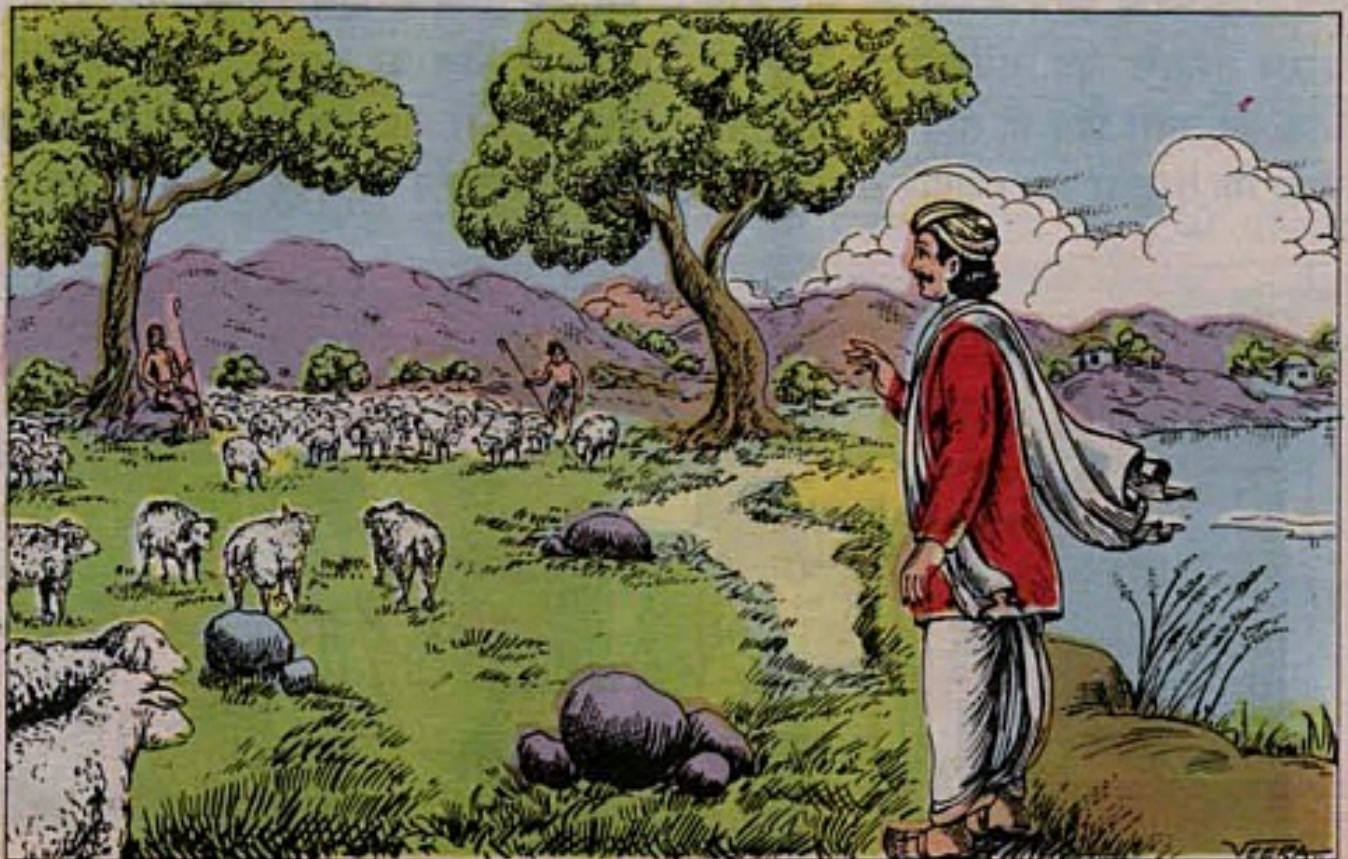
चाहिए और फिर वह सारा माल बिकना चाहिए जिससे तुम्हारी लागत तुम्हें वसूल हो जाये, फिर कहीं तुम्हें नींद आ सकती है!"

जयानंद की बातों में छिपा व्यंग्य वज्रगुप्त के दिल पर बाण की तरह लगा । इस पर वह तिलमिला उठा। वह कुछ और कहना चाह रहा था, लेकिन जयानंद ने उसे टोका और कहा, "वज्रगुप्त, क्या तुम नहीं जानते कि जो भेड़ें तुम्हारे घर के सामने से गुज़रती हैं, वे तुम्हारी नहीं हैं, और तुम ऊनी कपड़ों का व्यापार नहीं करते । तुम ने यह भूल क्यों की? दरअसल, तुम अपने आस-पास की हर चीज़ को व्यापार की दृष्टि से देखते हो और हर चीज़ से नफा कमाने की सोचते हो । यह तुम्हारी आदत बन गयी है । इसी कारण तुम बेमतलब की गिनती और हिसाब-किताब में पड़े रहते हो, इस से हर पल तुम्हें चिंता खाने लगती है, और इसी कारण तुम्हारी नींद ग़ायब रहती है । यह बात मैंने पहले दिन ही ताड़ ली थी । मैंने चाहा कि तुम्हारा मन व्यापार से हटे, किंतु पराजय मेरी ही हुई । मुझे यह स्वीकार करने में अब रत्ती भर भी संकोच नहीं कि तुम्हारी समस्या का हल मैं नहीं कर सकता । मुझे माफ कर दो ।"

"ऐसी बात नहीं, जयानंद । तुमने मेरी समस्या का हल कर दिया है । अभी मुझे असलियत का पता चला । अतृप्ति और सुख की नींद के बीच का रिश्ता में समझ गया हूं । मुझे अपने रोग का इलाज मिल गया है । मैं तुम्हारे प्रति कृतज्ञता से भरा हुआ हूं ।" वज्रगुप्त ने अपनी बात बड़े उत्साह से कही और अपने मित्र की पीठ उसने थपथपाई ।

"अच्छा । मैं भी तो जानूं वह इलाज है क्या?" जयानंद ने मुस्कराते हुए पूछा ।

"मैं आज ही अपना सारा कारोबार अपने बेटों में बाटे दे रहा हूं । बाकी का जीवन तुम जैसे मित्रों के साथ बेफिक्र बिताऊंगा । यही मेरे रोग का इलाज है । है न सही बात?" और यह कहकर वज्रगुप्त ने बड़े स्नेह से जयानंद को अपने गले लगा लिया ।

# ब्रह्म राक्षस

एक गांव में एक दुष्ट ज़मींदार रहता था। उस गांव के निकट ही एक घना जंगल पड़ता था। उस जंगल में से गुज़रने वाले व्यक्तियों को मरवाकर वह ज़मींदार उनका धन और मूल्यवान वस्तुएं हड़प लिया करता था। उस जंगल से किसी भी व्यक्ति का अधिक धन के साथ गुज़रना खतरे से खाली नहीं था।

एक बार एक ब्राह्मण उस राज्य के राजा से सम्मान पाकर उस जंगल में से गुज़र रहा था। तब ज़मींदार के आदमी अचानक उस ब्राह्मण पर टूट पड़े और उसे उन्होंने जान से मार डाला, उसका सारा धन लूट लिया। उसकी लाश जंगल में ही किसी स्थान पर गाड़ दी।

उस ब्राह्मण का एक पुत्र था। उस पुत्र का एक बेटा, अर्थात् मृत ब्राह्मण का एक पोता था, जिसे उसके पिता ने गुरुकुल में विद्या ग्रहण के लिए भेजा। उसकी उम्र दस वर्ष थी। उस बालक को भी अब उसी जंगल में से होकर जाना पड़ा।

जिस समय वह जंगल में से गुज़र रहा था, उसे एक वृद्ध ब्राह्मण दिखाई दिया। वह उस लड़के से बोला, "बेटे, मेरे साथ चलो, मैं तुम्हारी सहायता करूंगा।" फिर उस लड़के को वह घने पेड़ों के पीछे ले गया और वहां एक स्थल को खोदने पर उसे एक पीतल का बर्तन मिला।

उस बर्तन को उस लड़के को सौंपकर वह ब्राह्मण बोला, "बेटे, इस बर्तन में सोने के सिक्के हैं। इन्हें हिफाज़त से अपने पास रखो। जंगल पार करके जब तक तुम गांव में पहुंचोगे, तब तक रात हो चुकी होगी। रात को तुम ज़मींदार के घर पर ही रुक जाना" और यह कहकर वह ब्राह्मण ओझल हो गया।

२५ वर्ष पूर्व चंदामामा में प्रकाशित कहानी

लड़के ने बर्तन के मुंह पर बंधा कपड़ा खोला और उसमें झांककर देखा । वाकई, उसमें सोने के सिक्के थे ।

जैसे ही वह गांव में पहुंचा, चारों ओर अंधेरा छा गया था । ब्राह्मण ने जैसे उसे बताया था, वह लड़का उसी प्रकार ज़मींदार का घर पूछता हुआ वहां जा पहुंचा । फिर उसने ज़मींदार से वहां सोने की अनुमति मांगी । ज़मींदार ने अनुमति दे दी ।

रात जब गहरी हो गयी तो वह लड़का सोने की तैयारी करने लगा । बस, जब उसे लगा कि लड़का गहरी नींद सो रहा है तो ज़मींदार ने चुपके से उस बर्तन में से सारे सिक्के निकाल लिये और फिर उसके मुंह पर पहले की तरह ही कपड़ा बांध दिया । फिर वह अपने कमरे में जाकर चैन की नींद सो गया ।

अगली सुबह जब वह लड़का नींद से जगा तो उसने सबसे पहले अपने बर्तन को देखा, उसे वह बर्तन कुछ हलका लगा । फिर उसने उसके मुंह का कपड़ा खोला और उसके भीतर झांका । वह एकदम सकते में आ गया, क्योंकि वह बर्तन खाली था । वह सीधा ज़मींदार के कक्ष में गया और उससे बोला, "मालिक, मेरे इस बर्तन में सोने के सिक्के थे, लेकिन अब यह खाली है । किसी ने मेरे सिक्के इस में से निकाल लिये हैं ।"

लड़के की बात सुनकर ज़मींदार एकदम बौखला उठा । कहने लगा, "क्या बकते हो! मुझ पर चोरी का इल्ज़ाम लगा रहे हो? ऐसे अपराध के लिए, जानते हो, मैं तुम्हें फांसी के तख़्ते पर चढ़ा सकता हूं!"

फिर उसने अपने आदमियों से कहा कि उस लड़के को तहखाने में बंद कर दिया जाये । अब वह लड़का ज़मींदार का बंदी बन चुका था । इसके बाद ज़मींदार ने अपने गांव के बड़े-बुजुर्गों को बुलवाया । ये बड़े-बुजुर्ग, सब उसकी हां में हां मिलाने वाले थे । उसने उन्हें लड़के की सारी कहानी कह सुनायी और फिर उनसे पूछा, "मैं इस लड़के को फांसी के तख्ते पर चढ़ा देना ही मुनासिब समझता हूं ।"

ज़मींदार की बात वे कैसे काट सकते थे! एक ही स्वर वे में बोले, "इसमें संदेह की गुंजाइश कहां है? ऐसे धूर्त्त को तो फांसी

की सज़ा मिलनी ही चाहिए, वरना आप इन छोटे-मोटे लोगों के सामने उपहास का पात्र बन जायेंगे।"

बस, गांव में डोंडी पिटवा दी गयी कि एक लड़के को फांसी की सज़ा दी जाने वाली है, यह फांसी शाम के वक्त दी जायेगी, लोग फांसी वाले स्थल पर जमा हों।

शाम हुई और उस लड़के को फांसी वाले स्थल की ओर ले जाया गया। फांसी की सज़ा को अमल में लाने के लिए ज़मींदार वहां स्वयं मौजूद था।

वहां जमा हुए लोगों में वह वृद्ध ब्राह्मण भी मौजूद था जो उस लड़के को उस जंगल में मिला था।

ब्राह्मण आगे बढ़ा और उसने ज़मींदार से पूछा, "इस लड़के को फांसी पर क्यों चढ़ाने जा रहे हो? इसने ऐसा कौन-सा अपराध किया है?"

"यह पूछने वाले तुम कौन हो?" ज़मींदार ने ब्राह्मण से कड़ककर पूछा।

"मैं, मैं इस लड़के का दादा हूं।" ब्राह्मण ने हंसते हुए कहा।

"अच्छा, तो सुनो। तुम्हारे पोते ने मुझ पर चोरी का इल्ज़ाम लगाया है। रात को मैंने इसे सोने के लिए जगह दी। यह कहता है कि मैंने इसके सोने के स्किके चुरा लिये हैं। इसने मुझ पर कीचड़ उछाला है। इसीलिए मैं इसे यह दंड दे रहा हूं।" ज़मींदार ने उत्तर दिया।

"ठीक है, आप इसे सज़ा दे सकते हैं, पर पहले आप यह वचन दीजिए कि अगर इस लड़के का सोना आपके पास है तो तुरंत आपको ब्रह्मराक्षस उठाकर ले जाये।" ब्राह्मण ने उससे शपथ लेनी चाही।

इस पर ज़मींदार बोला, " मुझे मंजूर है। मुझे किसी का डर नहीं। यदि मैंने इस लड़के का सोना लिया है तो मुझे ब्रह्मराक्षस उठाकर ले जाये!"

ज़मींदार के मुंह से ये शब्द निकलने थे कि उसी क्षण वह ब्राह्मण वायु के वेग से ज़मींदार पर झपटा और उसे लिये-लिये आकाश में उड़ गया।

इसके बाद ज़मींदार का क्या हुआ, किसी को कुछ पता नहीं चला।

# पक्षपात

विशालपुर गांव में जानकीबाई नाम की एक अमीर औरत रहती थी। उसके दो बेटे और एक बेटी थी। वह अभी तीस वर्ष की ही थी जब उसके पति का देहांत हो गया। ज़मीन-जायदाद की कोई कमी न थी, लेकिन उसकी सार-संभाल बहुत ज़रूरी थी। बहरहाल, उसने अपनी बेटी-बेटों की खूब ढंग से परवरिश की और उसी गांव में अच्छे रिश्ते ढूंढ़कर उनकी शादियां भी कर दीं।

जानकीबाई के बड़े बेटे के दो बेटे और छोटे बेटे के एक बेटी तथा एक बेटा हुआ। बेटी के एक बेटी हुई। कहते हैं न, मूल से ज़्यादा ब्याज प्यारा होता है! यह बात जानकीबाई के मामले में सच निकली। जानकीबाई को अब अपनी संतान से ज़्यादा अपनी पोती-पोते प्यारे लगते थे। अब वह उनके बारे में ही सोचती थी।

पोती-पोते बड़े होने लगे। इससे उसके बेटों को अपने बच्चों की पढ़ाई की चिंता सताने लगी। तब जानकीबाई ने कहा, "यह चिंता अब तुम लोग छोड़ो! ज़मीन-जायदाद के झमेले तुम संभालो। मैं इन्हें शहर लिये जाती हूं। वहां किसी अच्छी-सी पाठशाला में इनकी शिक्षा का इंतज़ाम करूंगी। एक घर किराये पर ले लेंगे और वहीं पर रहेंगे। छुट्टियों में हम यहां पर आ जाया करेंगे।"

जानकीबाई के दोनों बेटे खुश हो गये और उसी खुशी में बोले, "मां, जिस तरह तुमने सलीके से हमारा पालन-पोषण किया है, उसी तरह तुम इनकी भी देख-रेख करो और इन्हें बढ़िया से बढ़िया शिक्षा दिला कर इनके व्यक्तित्व को संवारो।"

जानकीबाई अब अपनी पोती-पोतों के साथ शहर चली आयी और उन्हें उसने

रश्मि जैन

एक अच्छी पाठशाला ढूंढ़कर उस में दाखिल करवा दिया।

रहने के लिए उसने एक किराये का मकान ले लिया। इस के कुछ ही दिन बाद वहां जानकीबाई की बेटी और दामाद भी अपनी बेटी को साथ लेकर वहां चले आये।

बेटी ने मां से कहा, "मां, जिस तरह तुम मेरे भाइयों की संतान को यहां शिक्षा दिलवा रही हो, उसी प्रकार तुम मेरी बेटी का भी ख्याल करो। तुमसे यही मदद लेने हम दोनों यहां आये हैं।"

जानकीबाई को भला इस प्रस्ताव पर क्या आपत्ति हो सकती थी! उस ने फौरन अपनी स्वीकृति दे दी। अब उसकी नातिन भी वहीं उसके पास रहने लगी।

जानकीबाई के पोतों को अब लगा कि उनकी दादी के व्यवहार में कुछ परिवर्तन आ गया है। वह एक तरह से उनसे पक्षपात कर रही है, क्योंकि चाहे सब बच्चों को एक साथ बिठाकर खाना खिलाया जाता था, फिर भी दादी मां अपनी बेटी की बेटी को खास ढंग से खिलाती थी। वह कुछ भी मांगती, उसके लिए हाज़िर होता। यह बात जानकीबाई के पोती-पोतों को अखरने लगी थी, पर वे उसके प्रति अपनी भक्ति पूर्ण भावना के कारण उसके सामने अपना मुंह नहीं खोल पाते थे। हां, जानकीबाई के बड़े बेटे का बड़ा बेटा अपने मन में ऐसी कोई बात नहीं रखता था। उसे दादी मां के व्यवहार में कुछ भी अटपटा नहीं लगता था।

छुट्टियां हुईं और सब गांव चले आये। बड़े बेटे के बेटे, यानी विवेक, को छोड़कर

बाकी सब बच्चों ने अपनी-अपनी मां से कहा कि दादी-मां पक्षपात करती है जो उन्हें अच्छा नहीं लगता ।

बच्चों की शिकायत सुनकर बहुओं ने ठान लिया कि उन्हें अपनी सास से इसके बारे में पूछना ही होगा । पर सास से पूछने से पहले उन्होंने विवेक से जानना चाहा कि असलियत क्या है!

विवेक ने कहा, "मुझे दादी मां में किसी प्रकार का पक्षपात दिखाई नहीं देता । वह चाहे बुआ की बेटी को थोड़ा अलग ढंग से परोस कर देती है, लेकिन वह कुछ भी छिपा कर नहीं करती ।"

"यही तो मैं पूछ रही हूं-उसे अलग ढंग से क्यों परोसा जाता है? तुम सब को एक जैसा क्यों नहीं परोसा जाता? मां जी का क्या यह पक्षपात नहीं कहलायेगा?" विवेक की मां ने प्रश्न किया ।

विवेक ने अपना सर नकारात्मक ढंग से हिलाया और कहने लगा, "नहीं मां, कुछ भी हो, हम तो दादी मां के अपने ही कहलाते हैं न! लेकिन बुआ की बेटी की बात दूसरी है । वह दूसरे घर की बेटी है । इसीलिए उसके प्रति अधिक प्रेम दिखाया जाता है । हमें इस पर आपत्ति क्यों हो!"

जानकी बाई की बहुओं ने फिर कुछ कहना चाहा, पर इतने में जानकीबाई एकाएक वहां आ खड़ी हुई । वह बगल के कमरे में सब कुछ सुन रही थी । बोली, "विवेक अभी छोटा है । फिर भी उसने मेरे इस रवैये को ठीक से समझा और सही अनुमान लगाया । दूसरे, इस समस्या का हल हमारे पास है । हम इतने गरीब नहीं कि हम दूध-घी जैसे पदार्थ काफी मात्रा में न खरीद सकें । अब मैं इस बात का खास ख्याल रखूंगी कि मेरे पोते और पोती को मुझ पर किसी प्रकार का कोई संदेह न हो ।"

जानकीबाई का उत्तर पाकर उसकी बहुओं का गुस्सा काफूर हो गया । उन्हें अपने जल्दबाज़ी वाले व्यवहार पर थोड़ा दुःख भी हुआ ।

## प्रकृति : रूप अनेक

### पुर्तगाली जंगजू

"पुर्तगाली जंगजू" कोई योद्धा नहीं, बल्कि एक समुद्री प्राणी है जिसकी लंबाई ३० सेंटीमीटर और चौड़ाई १५ सें.मी. के करीब होती है। इसकी चोटी नाव के पाल के समान होती है। इसका पता पहली बार १८ वीं शताब्दी के आस-पास कुछ नाविकों ने लगाया। उन्हें यह जीव अपने आकार-प्रकार में पुर्तगाली युद्धपोतों की तरह लगा। इसीलिए इसका नाम "पुर्तगली जंगजू" पड़ा। इसकी चोटी पानी के ऊपर नाममात्र को दिखाई देती है, लेकिन इसके नीचे "पोलिप्स" नाम के छोटे-छोटे जीव भारी तादाद में रहते हैं। एक प्रकार की यह एक बस्ती ही होती है। ये जीव आहार समेटने का काम करते हैं। इसकी चोटी जो नाव के पाल के समान होती है, हवा के गुब्बारे-सी भरी रहती है।

### कॉफी का जन्म

इथोपिया में एक प्रांत है कफ्फा। वहां एक बार एक चरवाहे ने देखा कि उसके बकरे एक पौधे के फल को खाकर जोश से अपनी पिछली टांगों पर उछलने लगते हैं। चरवाहे ने उस फल को खुद भी चखा। उसे लगा कि उसमें कुछ अधिक फुर्ती आ गयी है। उसने वह फल ले जाकर एक पादरी को दिया। पादरी ने उसकी मदिरा का पान किया तो लगा कि काफी देर तक नींद पास नहीं फटकती। इस फल को उन्होंने 'कफ्फी' नाम दिया, क्योंकि इसकी खोज कफ्फा में हुई थी। बाद में यह नाम "कॉफी" हो गया।

### ऊदबिलाव की चेतावनी

ऊदबिलाव (बीवर) नदी-नालों के पास के लंबे-लंबे पेड़ों को अपने दांतों से काट डालता है, और जब वे पेड़ नदी-नालों के ऊपर गिर पड़ते हैं तो उनसे यह पुल या बांध का काम लेता है। जब पेड़ नदियों पर गिर रहे हों तो उनकी चपेट में दूसरे जानवर न आ जायें, इसलिए उन्हें चेतावनी देने के लिए यह अपनी पूंछ, ज़ोर-ज़ोर से पानी पर मारने लगता है। इससे दूसरे ऊदबिलाव फौरन समझ कर पानी में कूदकर सुरक्षित स्थलों पर पहुंच जाते हैं।

Don't you owe the
See my tail It's out of a Fairy Tale
Nice 'n' funny I'm a Bunny
Foxy is my name But I'm oh-so tame
Your Bear Hugs are warmer than mine
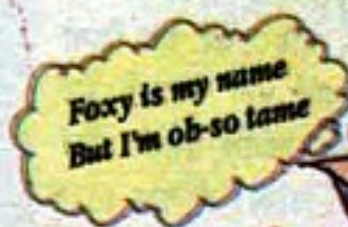
little one a cuddles?
Give the Li'l Panda a Handa
No carrots to eat
But I'm a treat
The
CHANDAMAMA
Collection of Soft Toys
CHANDAMAMA TOYTRONIX

# फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार १००)

पुरस्कृत परिचयोक्तियां नवम्बर, १९९२ के अंक में प्रकाशित की जाएँगी।

K. S. Vijayakar

M. Kameswara Rao

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियां एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ १० सितम्बर'९२ तक परिचयोक्तियां प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) रु. १००-/ का पुरस्कार दिया जाएगा। ★ दोनों परिचयोक्तियां केवल कार्ड पर लिखकर इस पते पर भेजें : चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६

---

## जुलाई १९९२ की प्रतियोगिता के परिणाम

पहला फोटो : **मुन्नी तू है बड़ी नटखट!**

दूसरा फोटो : **हर बात पर हंसे झटपट!!**

प्रेषिका : पूज शर्मा c/o सर्वेश कुमार शर्मा, चान्दनी चौक, दिल्ली-६

पुरस्कार की राशि रु. १००/- इस महीने के अंत में भेजी जाएगी।


**चन्दामामा**

भारत में वार्षिक चन्दा : रु. ४८/-

चन्दा भेजने का पता :

डाल्टन एजन्सीज़, चन्दामामा बिल्डिंग्ज़, वडपलनी, मद्रास-६०० ०२६

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

Soft Hearts
Juicy, Crunchy, Fruity treats

Soft Hearts
Soft Hearts
Soft Hearts
Soft Hearts

THE FINEST, WIDEST RANGE
nutrine